

तेज पाक्षिक, मनोरंजन ट्रैम्स 2.00 रुपये
अंक: ८ वर्ष: १८ १५ अप्रैल १९८२

दीवाना

हास्य
चित्रबाल



कुछ बिस्कुट्स केवल
स्वादी ही नहीं होते

वे उदास चेहरे को
मुस्काहट से
भर भी सकते हैं

स्वादि

ग्लूकोस बिस्कुट

हमारी अन्य किस्में

- कोकोनट कुकी
- ओरेंज क्रीम
- कस्टर्ड क्रीम
- बोरबोन क्रीम
- सलोना-सालटीन
- क्रिस्पी, सेवोरी
- स्टार

स्वादि जीवन के खुशी के क्षणों का एक स्वादमय साथी

व्यापारिक जानकारी के लिये सम्पर्क करें

आर्यावर्त ओवेसीज (प्रा०) लिमिटेड

7/35, दरियांगंज, अंसारी मार्ग नई दिल्ली-110002 फोन : 266197, 277626 Cable आर्यावर्तम्



डायमण्ड कॉमिक्स में

हंसा हंसाकर लोट पोटकर देने वाला
कार्टूनिस्ट 'प्राण' का जीवन्त चरित्र
'चाचा चौधरी'

चाचा चौधरी का दिमाग कम्प्यूटर से भी
ज्यादा तेज चलता है और बलंशाली साकृ
ज्यूपिटर का प्राणी है। चाचा चौधरी का
दिमाग और साकृ की शक्ति हमेशा दूसरों
की मलाई के लिये प्रयोग की जाती है।
इनके कारनामे मनोरंजन के साथ साथ शिक्षाप्रद भी हैं।



चाचा चौधरी और बोतल का जिन

मूल्य 3/-



अंकुर के केवल तीन अकों ने
बाल पत्रिकाओं की दुनियाँ में तहलका
मचादिया है! **डायमण्ड कॉमिक्स**
की नन्हे मुन्हों के लिये एक अनूठी पत्रिका
जिसमें आप हर माह पढ़ेंगे अपने जाने पहचाने
चरित्रों के रहस्यमय, रोचक रंगबिरंगे
चित्रों से भरपूर नये नये कारनामे!

अंकुर - 4

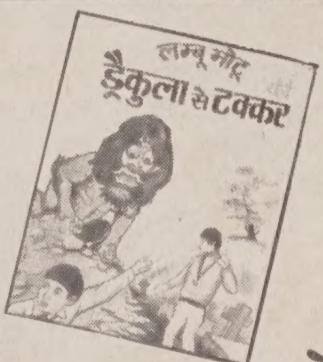
मूल्य 2.50

दो युवा जासूसों की दिल हिलादेने वाली कहानी

लम्बू मोटू की
ड्रेकुला से टक्कर

अपने निकट के बुक स्टाल से बरसीदे!

मूल्य 3/-



डायमण्ड कॉमिक्स

2715 दिल्लीगांज, नई दिल्ली-110002

www.diamondcomics.com

लल्लू

जैसे मैं कह रहा था . . . यह अब की बात नहीं है। बचपन से ही पता नहीं क्या बात है मेरे साथ उल्टी ही बात होती चली आ रही है। मां मेरे लिये खीर बनाती है तो उसमें गलती से चीनी की बजाये नमक डाल देती है।



जानती है जब मैं पैदा हुआ था, तब क्या हुआ था? अजीब बातों की शुरुआत तो वहाँ से हुई थी।

तुम्हारी बातें सुनकर मुझे बड़ी हँसी आती है। हे तुम बड़े इंटरेस्टिंग आदमी।



डाक्टर साहब देखो यह कैसा बच्चा पैदा हुआ है। हँस रहा है। और बच्चे पैदा होते ही रोते हैं और यह जोर-जोर से हँस रहा है।

ऐसा केस तो हमारे सामने पहले कभी नहीं आया। इसके ग्लैडस में कहीं खराबी लगती है। डाक्टर माधुर को यह केस दिखाओ।

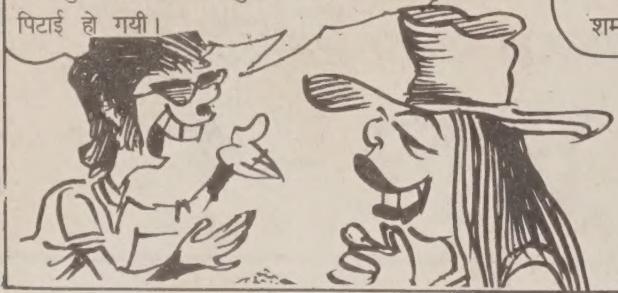
हे भगवान! मेरे घर में यह पोता कैसा पैदा हुआ जो पैदा होने पर हँस रहा है। और हमें रोना आ रहा है।



जब यह पेट में था तभी मुझे शक होने लग गया था। बहू खट्टी चीज मांगने की बजाय मीठी चीजें मांगती रहती थीं।

जब मैं पढ़ता था तो तीसरी में लगातार चार बार फेल हुआ। जब भी फेल होने का समाचार मम्मी और डैडी को सुनाता अचानक कोई न कोई ऐसी बात हो जाती कि दोनों को जोर की हँसी आती और हँसते-हँसते लोटपोट हो जाते। पांचवां बार पास हुआ तो दोनों को गुस्सा आया और मेरी पिटाई हो गयी।

ही ही ही! इससे तो लगता है कि जब तुम मरोगे तो तुम्हारे साथी तुम्हारी शोक सभा में हास्य कवितायें पढ़ेंगे और जोक्स सुनायेंगे। हे सकता है जब तुम्हारी अर्थी जा रही होगी तो अर्थी उठाने वालों में से पीछे से किसी की पैट फट जाये और सब लोग हँसते-हँसते तुम्हें शमशान ले जायें।



तुम मुझे लल्लू ही समझते हो। लेकिन लड़कियों को हँसाना बड़े काम की चीज है। अभी मैंने जो बातें कहीं उनमें से कई मनगढ़न्त थीं। मैं तो बस लीना को हँसा कर खुश करना चाहता था वह

मेरी बातें पर फिदा हो गयी और शादी का मेरा प्रयोजन मान ही लेगी।

यह क्या? लीना लैटर में लिखती है, “‘डियर लल्लू’ मैं तुमसे शादी नहीं कर सकती, जो बातें तुमने मुझे बताईं उससे मुझे लगता है कि अगर मैं मान गयी तो पंडित गलती से हमारी शादी की डेट ऐसी रखेगा तुम बरात लेकर मेरे घर आओगे तो तुम्हें पता लगेगा उस दिन तो राखी का त्यौहार है। और मुझे राखी ही पहनानी पड़ेगी। मैं अपना मजाक नहीं बना सकती।”



आपका भविष्य

१० कुलत्रीष शर्मा ज्योतिथो मुमुक्षु देवज भूवन वं हंसराज शर्मा



मेष : परिवार से सुख, सेहत नभम, लाभ खर्च बराबर, परिश्रम अधिक, यात्रा सफल, झगड़े आदि से परेशानी, काम देव से या रुक कर बनेगी, कारोबार में उन्नति, लाभ बढ़ेगा, घेरे लू योजनाओं पर व्यय अधिक होगा।



वृष : व्यय अधिक, कारोबार मध्यम, यात्रा हो सकती है, कोई विशेष सूचना मिलेगी, कारोबार से यथार्थ लाभ, पत्र सहयोग से काम चलेगा, दौड़धूप अधिक, घेरे लू चिन्ता बनेगी, कारोबार सुधरेगा, लाभ में वृद्धि



मिथुन : मनोरंजन आदि पर खर्च, आय यथार्थ, कारोबार में सुधरा, घेरे लू खर्च ज्यादा, आय में वृद्धि, सुस्ती का प्रभाव, कारोबार से अच्छा लाभ, ऋण के कामों में परेशानी, यात्रा सावधानी से करें।



कर्क : अफसरों से मेल-जोल, लाभ यथार्थ, अकारण वैर-वरोध से परेशानी, कामों में सावधान, लाभ अच्छा होगा, राजपक्ष से परेशानी अन्य हालात सुधरेंगे, शत्रु पर विजय, कारोबार से यथार्थ लाभ, कोई विशेष काम बनेगा



सिंह : स्वभाव में गुस्सा, काम देव से बनेगे, लाभ अच्छा पर मिलेगा देव से, अद्युता काम बनेगा, कारोबार बढ़ेगा, परिश्रम सफल, झगड़े से बचें, अफसरों से मेल-जोल, यात्रा सफल पत्र सहयोग देंगे, कारोबार से अच्छा लाभ



कन्या : व्यय यथार्थ, चिन्ता व्यर्थ में ही लगी रहेगी, आर्थिक परेशानी दूर होगी, परिवार से सुख, धार्मिक कामों में रुचि, विगड़े काम बनें न जर आएं, व्यापार में उन्नति, संघर्ष भी काफी रहेगा।



तुला : शारीरिक कष्ट या सुस्ती छाँ रहेगा, लाभ यथार्थ, वातावरण सुधरेगा, परिश्रम द्वारा सफलता नसीब होगी, आमदनी अच्छी व्यय भी बढ़ेगा, यात्रा सफल, दौड़धूप अधिक बड़ों की ओर से चिन्ता।



वृश्चिक : दिन ठीक नहीं सावधानी से रहें, यात्रा न करें, महत्वपूर्ण कारोबार बढ़ेगा, हालात भी सुधरेंगे, यात्रा में कष्ट या परेशानी, अफसर सहयोग से काम बनेगा, लाभ अच्छा होगा, हालात ठीक होते जाएंगे।।।



झनु : कामकाज का बोझ काफी रहेगा, लाभ बढ़ेगा, आय यथार्थ, यात्रा में सुख, हालात भी सुधरेंगे, धार्मिक कामों में रुचि एवं व्यय, अजनबी लोगों से बचें, चोट लगाने का भय है, भाग्य साथ देगा, परिश्रम अधिक।



मकर : मनोरंजन आदि में समय अच्छा गुरुरेगा, व्यय बढ़ेगा, संघर्ष काफी रहेगा, व्यर्थ की चिंता बनेगी, आय में वृद्धि, काम-काज का बोझ बढ़ेगा, धर्म कर्म में रुचि, सेहत बढ़ाव, यात्रा हो सकती है।



कुम्भ : यात्रा न करें, आय यथार्थ, कारोबार सुधरेगा, यात्रा सफल, व्यय बढ़ेगा, पत्र सहयोग देंगे, आमदनी अच्छी पर मिलेगी देव, से ऋण आदि के कामों में परेशानी, नई वस्तुओं की खरीद पर व्यय



मीन : सुस्ती का प्रभाव बढ़ता रहेगा, आय व्यय समान, कारोबार ठीक चलेगा, शुभ अद्युत विश्रित फल मिलेंगे, दौड़धूप अधिक, अच्छे काम बनें त्रिखाई देंगे, स्वभाव में गुस्सा रहेगा, आय में वृद्धि, घोलू शर्मी अधिक रहेगा।

आपके पत्र

दीवाना का होली अंक ५ रंगों से भरपूर प्राप्त हुआ। मुख पृष्ठ तो देखते ही हंसी आ गयी। ऐसा पोस्टर आज तक कहीं भी देखने को नहीं मिला। होली का भूत कहानी पढ़ कर तो ऐसा लगा कि ऐसी कहानी का ही अब तक इन्तजार था। राजा जी, रंगोली, रंग बदरंग, लल्लू और भंग फूफ़इंटिंग, होली के क्युं रंग तथा खास पेश सिलबिल पिलपिल होली खटिया खड़ीकर लाल की तो कबिल-ए-तरीफ थी।

—गुरमीत सिंह भीता (नवी दिल्ली-४९)

लगभग ६ वर्षों से मैं दीवाना का नियमित पाठक हूं इतने समय से लगातार पाठक बने रहने का कारण है कि मैं जो पसन्द करता हूं वह मुझे केवल दीवाना में ही मिलता है।

नया अंक आते ही खरीद लाया और पूरा पढ़ डाला। इस अंक की पूरी सामग्री एकदम बढ़िया थी ५-६ अंकों में काका के कारतूस नहीं प्रकाशित हुए क्या कारण है। कृपया इन्हें जरूर प्रकाशित किया करें। राणा जी बहुत ही अच्छा फीचर है आशा है ये पूरा हमारा मनोरंजन करता रहेगा।

—राजेन्द्र सिंह बेदी, सितारगंज्

आज ही दीवाना का १५ मार्च, का नया अंक मिला। पढ़कर मजा आ गया। खासकर एशियाई खेलों की दीवानी पब्लिसिटी ने बहुत मनोरंजन किया। इसके अलावा परोपकारी जी भी अच्छे थे।

—जगबीर राठी जीन्द (हरि.)

अब तो मैं आपके इस मैगजीन की तारीफ करते-करते ही थक गया हूं। हर नए अंक को पढ़ कर ही सांस लेता हूं। इस पत्रिका में बच्चों के लिए जितना साज़ सामान है, युवा वर्ग के लिए भी उतना ही साज़ सामान है। जो भी दीवाना पढ़े इसका दीवाना हो कर रह जाए। आजकल के इस महांगाई के जमाने में भी इतने कम पैसे में इतना सारा सामान असेंध्र भव से लगता है। इस पत्रिका पर दूर के ढोल सुहावने वाली लोको-कित असर नहीं खाती क्योंकि इसे पाते ही दोनों हाथों में लड्डू से लगते हैं।

—रीची प्रहार, बीकानेर

दीवाना का अंक नं० ४ मिला। हर बार की तरह इस बार भी उम्मीद से ज्यादा अच्छी सामग्री मिली। इस अंक में सबसे ज्यादा “कहावतें और मुहावरे” पसन्द आयीं। बाकी फीचर जैसे “ब्हीलर किस्सा”, “मोटू-पतलू”, “परोपकारी” और ‘लल्लू’ भी लाजवाब थे। नया फीचर “राजा जी” इतना अच्छा नहीं था।

कुल मिलाकर पत्रिका इतनी अच्छी थी कि उस के सामने १.५० रु. कुछ भी नहीं। अगले अंक का जल्द इन्तजार है।

—नरेन्द्र, कानपुर

दीवाना अंक चार मिला मुख पृष्ठ देख कर बेहद हंसी आई कि मुझे दीवाने का दीवाना बनाना पड़ा। अब मैं दीवाने का इतना दीवाना हो गया हूं की अब दीवाना पढ़े वैगर नींद ही नहीं आती। यह बेहद रोचक और ज्ञानवर्धक होता है। आने वाले अंक का बेहद जोरों से इंतजार है।

—एम. एम. गुजराल, करनाल



मुद्रक पृष्ठ पर

सब रवड़े हैरान
देख अजीब नजारा
आरवं बन्द पट्टी से
मुहु ठक लिया सारा।
घसीटा पूछे कटके से
यह क्या है लाला
मुक्कों तो लगता है
कुछ दाल में काला॥

अंक ८ वर्ष : १८ १५ अप्रैल १९८२

सम्पादक: विश्व बन्धु गुप्ता
सहसम्पादिका: मंजुल गुप्ता
उपसम्पादक: कृपा शंकर भारद्वाज
दीवाना तेज पाक्षिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

वार्षिक चन्दा : २७ रुपये
अद्वा वार्षिक : १४ रुपये
एक प्रति : १.५० रुपये

खजाने की तलाश



मूल : शकील अनवर
अनु : तरनजीत

बात मजाक की थी, शज्जी को उम्मीद भी न थी कि मजाक ही मजाक में बात इतनी बढ़ जायेगी वरना वह इतना गंभीर मजाक कभी न करता।

उस रोज शाम को वह सबके साथ इमली वाले खण्डहर में चोर-सिपाही वाला खेल खेल रहा था। एक बार जब मतीन चोर बनने लगा तो उसी ने बात छेड़ी।

“तुमने कभी कोई ऐसी किताब पढ़ी है जिसमें किसी डाकू ने अपने खजाने का जिक्र किया है?”

“मैंने सुल्ताना डाकू की सुरंग के बारे में तो पढ़ा है, खजाने के बारे में नहीं” “शज्जी ने उसकी आंखों पर पट्टी बांधते हुए जवाब दिया।

“वैसे यह डाकू भी होते खूब थे”—मतीन ने आंखों पर बंधी हुई पट्टी को जरा ढीला करने की कोशिश की और बोला—“अब देखो ना, हर डाकू अपना खजाना किसी न किसी गुफा में छुपा कर रखता था और वहां तक पहुंचने के लिए गुप्त नक्शा भी बनाता था।”

“और जिसके पास वह नक्शा होता था वही उस खजाने का मालिक होता था।” शज्जी ने उसकी बात काटी और जल्दी से बोला—“ये अपने चचा इकबाल हैं ना, इनके पास भी एक खजाने का नक्शा है” वह शरारत से मुस्कराया।

“अच्छा!” मतीन आश्चर्य से उछल पड़ा। उसने जल्दी से अपनी आंखों पर बंधी पट्टी खोल डाली। उसकी आंखों से आश्चर्य

झलक रहा था।

“एक दिन चचा इकबाल बता रहे थे कि उनके पास एक खजाने का गुप्त नक्शा है,” शज्जी को अपनी शरारत पर मजा आ रहा था, “और मजे की बात यह है कि यह नक्शा भी किसी डाकू का ही है।”

“किस डाकू का?” मतीन की उत्कंठा जाग उठी।

“ओर होगा कोई सुल्ताना-बुलताना खजाना किसी का भी हो—खजाना ही होता है।”

“अच्छा तो खजाने को चचा ने निकला क्यों नहीं?”

“भई अब ये तो वही जानें। हाँ एक दिन वह बता रहे थे कि उन्हेंने किसी लोहे के बक्स बनाने वाले कारखाने को सैकड़ों बड़े-बड़े सन्दूक बनाने का ऑर्डर दिया हुआ है।”

“सैकड़ों सन्दूक!” मतीन की आंखें फिर आश्चर्य से फैल गयीं, “इन्हें सारे सन्दूकों का क्या करेंगे?”

“खजाना रखेंगे भई!” शज्जी कुछ और भी कहता कि इन्हें मैं दूसरे सार्थी वही आ गये। वह खड़े खड़े मतीन की आंखों पर पट्टी बांधे जाने का इन्तजार कर रहे थे। शज्जी ने पट्टी बांधी और खेल शुरू हो गया।

शज्जी समझा था कि छोटा-मोटा झूठ शरारत में बोला जाये तो कोई एतराज की बात नहीं लेकिन उसे यह नहीं मालूम था कि कभी-कभी छोटा-मोटा झूठ ही किसी बड़ी बात की बुनियाद बन जाता है। उस

रोज मतीन रात भर अपने बिस्तर पर करवा बदलता रहा। उसे नींद नहीं आई। रुक्खरक्खर खजाने और उसके नक्शों का ख्याल उसे आता रहा। वह सोचता रहा कि अगर खजाने का नक्शा उसके हाथ लग जाये तो मजा आ जाये। मगर चचा इकबाल वह नक्शा उसे क्यों देने लगे? वह सोचता रहा और फिर उसे एक तरकीब सूझ ही गई।

अगले दिन स्कूल जाते वक्त उसने शज्जी से उस नक्शे का जिक्र छेड़ दिया उस वक्त साजिद और अरशद भी साथ थे उन दोनों को कल मतीन ने नक्शे वाली बात बता दी थी। वह दोनों भी नक्शा हासिल करना चाहते थे।

“शज्जी! चचा इकबाल के सन्दूक का तक बन कर आ जायेंगे?”

“अरे उनकी एक ही कही। हो सकता है सन्दूकों का इन्तजार किये बगैर ही वह खजाना रिकाली लायें और यह भी हो सकता है कि वह खजाना कभी न निकालें बल्कि सन्दूकों में अपनी किताबें, कपड़े और कूड़ करकट भर दें।”—शज्जी ने लापरवाही से जवाब दिया।

“मतलब यह कि उन्हें इस खजाने की ज्यादा दिलचस्पी नहीं?”

“अब तुम्हीं देखो अगर दिलचस्पी होती तो खजाना कभी का निकाल लेते और अतक हमारा घर महल बन जाता।”

“तुम भी निरे बुद्ध हो शज्जी”—अचानक मतीन का लहजा बदल गया।

“क्यों? इसमें बुद्धपन की क्या बाहे?”

हँसना मना है-



पुलिसमैन एक छोटे से लड़के को घसीट कर लिये जा रहा था लड़का हाथ में क्रिकेट बैट कस कर पकड़े था। जाते-जाते राह में उन्हें लड़के के कुछ छोटे-छोटे दोस्त दिखाई दिये। “अरे तुमने क्या किया है?” उनमें से एक ने पूछा! “कुछ भी नहीं,” लड़का बोला। “मुझे पुलिस की क्रिकेट टीम में खेलने के लिये आमन्त्रित किया गया है”

“बर्थ कन्ट्रोल में विश्वास न करने वाले को क्या कहते हैं?
“डैडी”!

मेरे पति ने हमारे विवाह पर संसार मेरे कदमों पर ला देने का वादा किया था। अब मेरे ग्यारह बच्चे हैं। वादा उन्होंने काफी हद तक पूरा कर दिखाया।

सूर्य ने चन्द्रमा से पूछा— “आज तुम इतने पीले क्यों दिखाई दे रहे हो?”
चन्द्रमा— “ओह! मैं सदा रात की शिफ्ट में काम करता हूँ न?

एक सेठ जी की आंख नकली थीं, पेट के बल लेटे पड़े थे। डाक्टर ने उनकी आंख के पास उंगली हिलाई और कहा, ‘ये मर गया है। सेठ जी बोले ‘लेकिन मैं तो जिन्दा हूँ।’ नर्स बोली ‘चुप! डाक्टर जी विलायत पलट हैं ये क्या झूठ बोलते हैं।



पक्षियों के दिमाग—

साधारणतया समझा जाता है कि पक्षियों की आंखें केवल उनके देखने का कार्य करती हैं, परन्तु पक्षियों की आंखें देखने के अलावा भी काम करती हैं।

उड़ते समय पक्षियों की आंखों से टकराने वाली हवा, उनकी आंखों के पानी को सुखा देती है जिससे पास की नाड़ी में रक्त ठंडा हो जाता है।

इज़राईल के एक खोजकर्ता जो बेन गुरियन विश्वविद्यालय से सम्बन्धित हैं के अनुसार यह रक्त जो कि पक्षी की vein में होता है, दिमाग में दौरा कर पक्षी के दिमाग की दूसरी (arterial) रक्त नाड़ियों के रक्त को ठंडा करता है, जिसके फलस्वरूप दिमाग का तापमान कम रखना पड़ता है अन्यथा उनके शरीर के नरवस सिस्टम के नष्ट होने का डर होता है।

यह प्रमाणित करने के लिये कि यह तापमान घटने का कार्य पक्षियों के शरीर में होता है खोजकर्ता ने एक परीक्षण किया। एक कबूतर के सर पर एक प्लास्टिक का लिफाफा ढक दिया गया केवल उसकी आंखें खुली रखीं। इस पक्षी का शारीरिक तापमान बढ़ाने पर देखा गया कि जब तक कबूतर की आंखों को हवा लगती रही उसका दिमाग ठंडा रहा, परन्तु आंखें ढकने के साथ ही उसके दिमाग का ताप बढ़ गया।

जाने-माने बबल्स जूते



- ★ हर अवसर व हर जरूरत के लिये असली बबल्स जूते बेहतरीन चमड़ व लच्चकदार रबड़ के तले से बनाये जाते हैं।
- ★ बबल्स जूते देखने में आकर्षक व चलने में आरामदेह एवं टिकाऊ होते हैं।
- ★ बच्चों एवं सभी उम्र के पुरुषों के लिये सभी साईजों व रंगों में उपलब्ध।
- ★ हर कसौटी पर खरे ऊरने वाले।

सम्पूर्ण भारत में मुख्य-जूता विक्रेता एवं खेल सामग्री विक्रेताओं के यहां उपलब्ध।



BABALS SUNNY ENTERPRISES An Ex-Serviceman concern
D-133, OKHLA INDUSTRIAL AREA, PHASE-I NEW DELHI-110020
PHONE - 637133

"अरे जब उन्हें खजाने में दिलचस्पी नहीं है तो तुम उनसे नकशा क्यों नहीं ले लेते।"

शज्जी ने एक नजर उसकी तरफ देखा पिछे बोला, "यहीं तो मुसीबत है। मैंने एक बार कोशिश भी की थी मगर वह नकशा उन्होंने न जाने कहा रखा है कि तलाश के बावजूद भी मुझे नहीं मिल सका।"

"किसी किताबों वाली अलमारी में क्षुपा होगा"—साजिद ने राह दिखाई।

"उस रोज एक ही किताब खोलकर तो देख पाया था और आज कल तो वह अपने कमरे में ही रहते हैं इसलिये मौका ही नहीं मिलता।"—शज्जी ने बेजारी से एक लम्बी सासं ली।

"ओह—" मतीन सोचने लगा, "अच्छा अगर तलाश किया जाये तो मिल जायेगा न?"

"मिलेगा क्या नहीं? भला तलाश करो और न मिले?"

"फिर ऐसा करेंगे चचा इकबाल जब कहीं बाहर गये हुए हों तो उनके कमरे की तलाशी ली जाये।"

"भई वह कहीं जाते भी तो नहीं।"

"दोपहर में सोते तो होंगे।"

"अरे हाँ" शज्जी ने चुटकी बजाई, "दोपहर में तो वह ऐसी लम्बी तान कर सोते हैं कि कान पर नगाड़े भी बजाओ तो भी न उठें।"—वह शारात से मुस्कराया।

"बस तो फिर क्या है? हम सब चुपके से उनके कमरे में दाखिल होकर नकशा तलाश करेंगे। एक और चार में तो बड़ा फर्क होता है ना।"

रास्ते भर शज्जी

उनकी हाँ में हाँ मिलाता रहा मगर उसके हाथों के तोते ज़ेरूर उड़ गये। उसे क्या पता था मि. मतीन पंजे झाड़ कर उसके पीछे पड़ जायगा। अब सवाल यह था कि चचा इकबाल दोपहर को घर होते ही नहीं थे। वह तो अपने ऑफिस में काम कर रहे होते थे। उसने तो उन्हें टालने की गरज से इतना कुछ कह दिया था और फिर नक्शे की बात तो सरासर गलत थी। अब वह कहाँ से नकशा पैदा करे? फिर उसने सोचा, अच्छा है तलाश करके बेवकूफ बनेंगे नकशा होगा तो मिलेगा, जब है ही नहीं तो मिलेगा क्या?

स्कूल से वापसी पर इत्फ़ाक से चचा इकबाल शज्जी को घर मिल गये। वह सहन में बैठे आशू-गुल्लू और टिन्नू को लतीफे सुना रहे थे।

"ऐ, तुम्हें क्या हुआ, आज तुम्हारा मुह क्यों लटका हुआ है—" शज्जी को देखते ही उन्होंने कहा।

"आज ज़रूर बेंच पर खड़े होकर आये हो।"

"जी नहीं आप तो सबको अपने जैसा समझते हैं।" शज्जी ने बुरा-सा मुंह बनाया।

"अरे भई क्या हुआ?"

"क्या बताऊं आपको। बेकार ही मुसीबत गले पड़-गई हैं—वह बैठकर जूते खोलने लगा।

"वो है ना मतीन, और सजिद उन्हें स्कूल से रोज भाग जाने के सिवा और कोई काम है नहीं। अब कल से खामखाह मेरी जान को आये हुये हैं।"

वजह तो होगी कोई?"

"बात दरअसल यह थी चचाजान। यह मतीन हर वक्त डाकुओं और खजानों की बात करता रहता है। वह कहता है कि अगर उसे किसी का छिपा खजाना मिल जाये तो वह शहर का सबसे बड़ा रईश बन जाये।"

"हूँ फिरद़?"

"फिर क्या, यूँ ही अचानक मजाक में मैंने झूठ बोल दिया कि आपके पास किसी खजाने का नकशा है। अब वह मेरे सिर है कि किसी तरह वह नकशा मैं उन्हें दे दूँ। कसम से चचाजान उनको इतना टालना चाहा मगर वह मानते ही नहीं।"

"यह तुमने बुरा किया"—चचा इकबाल अचानक गंभीर हो गये, मगर तुमने झूठ तो नहीं कहा। एक खजाने का नकशा सचमुच में मेरे पास है।"

"है।" शज्जी हैरत से चचा इकबाल को देखता रहा गया।

"हाँ सच, इतने बड़े खजाने का नकशा है मेरे पास कि उस खजाने से बड़ा कोई खजाना हो ही नहीं सकता।"

"तो आप उस खजाने को निकाल क्यों नहीं लेते। एक कोठी लीजिए। एक कार"

चचा इकबाल अजीब से अंदाज में हसे, "अरे बुद्ध मैंने उस खजाने से बहुत कुछ निकाल लिया है लेकिन वह ऐसा अनोखा खजाना है कि उसमें जितना जी चाहे निकाल लो वह कम नहीं हो सकता। खैर मैं उड़े उस खजाने के नक्शे के बारे में बताता हूँ।

शज्जी उनकी तरफ सवालिया नजर से तकने लगा।

"मेरे दादा और तुम्हारे परदादा डाकू नहीं थे लेकिन फिर भी उनके पास एक खजाना, कभी न खत्म होने वाला खजाना, उन्होंने उस

खजाने तक पहुँचाने के रास्ते का एक नक्शा भी बनाया जो तुम्हारे और मेरे पापा के विरासत में मिला फिर वह नकशा तुम्हारे पापा को मिला और अब वह नकशा मेरे पास है लेकिन अब वह नकशा तुम्हें मिल जायेगा।

"मुझे!"—शज्जी उछल पड़ा, "मुझे मिल जायेगा, सचमुच!"

"लेकिन आसानी से नहीं मिलेगा तुम्हारे चाचा इकबाल मुस्कराये," तुम्हें अपने साथियों के साथ मेरे कमरे की तलाशी लेने पड़ेगी। नकशा तलाश कर लो फिर वह खजाना तुम्हारा और तुम्हारे साथियों का होगा।"

शज्जी ने आगे कुछ भी नहीं सुना। वह उठा और बाहर निकल गया। एक दोपहर को चचा इकबाल अपने कमरे में सो रहे थे। उनके खर्टों की आवाज सारे में गूंज रही थी। शज्जी ने आहिस्ता से कमरे का दरवाजा खोला फिर वह चारों अंदर कमरे में दाखिल हो गये और कमरे की तलाशी ली जाने लगी। सब कुछ उलटपलट किया गया। अचानक शज्जी खुशी से उछल पड़ा। आलमारी से एक पुरानी और मोटी किताब फर्श पर गिरी और उसके अन्दर से एक पुराने कागज का बड़ा सा लिफाफ़ा निकल कर बाहर आ गया। शज्जी ने जल्दी से खोला। वह खजाने का नकशा ही था। उसने भूगोल के नक्शे में बनाये जाने वाले सांकेतिक निशानों के बारे में पढ़ा था। वह जल्दी से मतीन का हाथ पकड़ कर कमरे से बाहर निकल गया।

अपने घर से मतीन ने कुदाल ले ली। साजिद एक मिट्टी खोदने का फटवड़ा ले आया और वह तीनों शज्जी के पीछे चल पड़े। शज्जी नक्शे के सहरे आगे बढ़ रहा था। "अब पचास कदम दाईं तरफ" शज्जी ने दायीं तरफ मुड़ने वाली सड़क की तरफ इशारा किया और इसी तरह नक्शे के सहरे वह बस उसे जगह तक पहुँच गये जहाँ खजाना होना चाहिये।

वह चारों खुशी से पागल हो उठे। यहीं वह खजाना छिपा है—शज्जी की आवाज खुशी से कांप सी रही थी, दिल अजीब से अंदाज में धड़क रहा था अचानक उसकी निगाह उस इमारत पर टिक कर रह गयी जिसके सामने इस समय वह सब खड़े थे। यह इमारत उनके अपने स्कूल की इमारत थी।

फटक के ऊपर स्कूल के नाम के बाद बोर्ड पर बड़े बड़े शब्दों में लिखा था—"जान ही सबसे बड़ा खजाना है।"

किंग सिगरेट

मैं फूल किंग साइज मैन्थल सिगरेट कम्पनी का सेल्ज मैन हूं। राजा से मिलना चाहता हूं।

भाई, यह लो पांच का नोट। इसे मेरा बिजिटिंग कार्ड समझ लो। मुझे राजा से मिल तो लेने दो।



हजूर की खिदमत में बंदा आदाब पेश करता है।

यह जानते हुये भी कि मुझे सिगरेट से कितनी सख्त नफरत है तुमने मेरे पास आने की जुरूरत की? ठीक है अगर तुम यह साक्षित न कर सके कि सिगरेट अच्छी चीज़ है तो मैं तुम्हें तोप के झुंह पर बंधवा कर उड़वा दूँगा।

मंजूर है। हुजूर दुनिया का हर सेल्ज मैन घर से सिर पर कफन बांध कर ही निकलता है। आप जैसे किंग सिगरेट नहीं पीयेंगे तो हमारी किंग सिगरेटें कौन पीयेगा?



महाराज, सिगरेट तो पीकर देखने वाली चीज़ है। जरा लगा कर देखिये।

महाराज यहीं तो हमारी सिगरेट में खूबी है इसे पीकर इतने जोर की खांसी आती है कि लड़ाई के मैदान में दुश्मनों की आधी फैज़ तो यहीं समझ कर भाग जायेगी कि शेर दहाड़ रहा है।

बोलो, अब तुम्हें क्या कहना है?

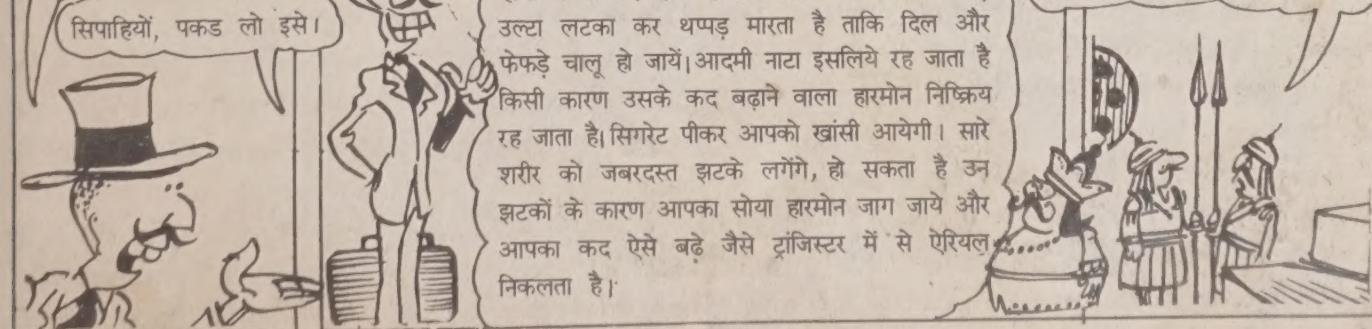


रातभर आपको खांसी आयेगी और पहरेदार जागते रहेंगे तो कोई बागी सोते में आपका सिर काट कर नहीं ले जा सकेगा।

सिपाहियों, पकड़ लो इसे।

ठहरिये महाराज, अभी असली राजा तो मैंने बताया ही नहीं। अगर आप बचपन से ही सिगरेट पी रहे होते तो शायद आपका कद मेरे बराबर ऊँचा होता। आपने देखा होगा बच्चा पैदा होता है तो डाक्टर उसे टांग से पकड़ उल्टा लटका कर थप्पड़ मारता है ताकि दिल और फेफड़े चालू हो जायें। आदमी नाटा इसलिये रह जाता है किसी कारण उसके कद बढ़ाने वाला हारमोन नियंत्रिय रह जाता है। सिगरेट पीकर आपको खांसी आयेगी। सारे शरीर को जबरदस्त झटके लगेंगे, हो सकता है उन झटकों के कारण आपका सोया हारमोन जाग जाये और आपका कद ऐसे बढ़े जैसे ट्रांजिस्टर में से ऐरियल निकलता है।

उस सेल्ज मैन के बच्चे ने हमारे राजा को पत्ती नहीं किया। पट्टी पढ़ा दी कि अब दिन रात सिगरेट पीता रहता है। कहां तो पहले सिगरेट का नाम सुनते ही तलवार निकाल लेता था।



चतुर्थ अंकित लेख

भाग - ५

ले. प्रेम नाथ

मि. जीटर ने उठ कर अपने कपड़ों पर से धूल मिट्टी छाड़ी और बोले "ठीक है लड़कों, इस के लिये तुम्हें पछताना पड़ेगा. साथ ही तुम्हें घड़ी मिलने का भी पछतावा ही ही होगा।" ऐसा कहते-कहते वह बाहर चला गया।

राजा कौन है?

राजू ने डेस्क पर हाथ मारते हुए कहा "अब मीटिंग शुरू होती है. और हैडमास्टर के छोटे दफ्तर में बैठे तीनों और लड़के चुप हो गये. यह बात लड़कों के चिल्लानेवाली घड़ी मिलने तथा मि. जीटर के उसके छीनने का प्रयास करने के अगले दिन की दोपहर की बात है. वे बहुत व्यस्त थे तथा अब बैठ कर वे देखना चाहते थे कि वे खोज में कहाँ तक आगे बढ़ पाये हैं।

राजू ने हरी को उसके घर फोन किया था और क्योंकि हरी के पास कार ड्राइव करने का अपना लाइसेंस था वह अपने पिता की पुरानी कार ले कर माथुर कबाड़ी घर इनसे मिलने आ गया था।

राजू ने श्याम को अपनी रिपोर्ट बताने को कहा. श्याम लड़कों में सबसे अधिक व्यस्त था, उस दिन सुबह श्याम अपने पिता के साथ नई देल्ली गया था जहाँ के एक समाचार पत्र में उसके पिता फीचर लिखते थे. उसके पिता ने वहाँ के रिकार्डरूम के इन्वार्ज से श्याम को मिलवाया था. रिकार्डरूम में सैकड़ों फाइलिंग कैबिनेट लगे थे जिनमें अखबार में छपी कहानियों की कटिंग नाम और विषय के आधार पर रखी हुई थीं. नाम कहानी से सम्बन्धित व्यक्ति का था।

श्याम का विशेष काम आज यहाँ से हरी के पिता महेश चन्द्र तथा उनके मुकदमें के विषय में, चंदू छेटे या मि. हरीश के विषय में और बहुमूल्य कलाकृतियों की चोरी के विषय में जानकारी एकत्रित करना था. श्याम

बहुत सारी जानकारी एकत्रित करके लाया था जो वह दूसरे लोगों को बताने को उत्सुक था. परन्तु जानकारी उसने संक्षेप में ही दी।

महेशचन्द्र के विषय में अधिक कुछ पता न लगा था उनके मुकदमे के विषय में भी यह लोग करीब-करीब सब कुछ जानने योग्य पहले से ही जानते थे. उनके खिलाफ पाये गये सबूत स्थान से सम्बन्धित थे परन्तु पुलिस के उन्हें अपराधी समझने के लिये पर्याप्त थे. पुलिस वालों का यह भी प्रयास रहा था कि महेशचन्द्र इस बात का इकबाल कर ले कि दस वर्ष से दिल्ली के निकट के स्थानों में होने वाली कलात्मक वस्तुओं की चोरी में इनका हाथ था, परन्तु महेशचन्द्र ने अंत तक अपने को निर्दोष कहा था।

"कुछ चोरियों तो तुम्हारे दिल्ली आने से पहले हुई थीं।" राजू ने हरी से पूछा?

"हाँ यह ठीक है हम लोग दिल्ली केवल छः वर्ष पहले ही आये हैं, इसीलिए मैं कहता हूँ, मेरे पिता का इनमें कोई हाथ नहीं है, उनका पहले हुई चोरियों से कोई सम्बन्ध नहीं है।" हरी ने उत्तर दिया।

"यदि यह कार्य एक ही गिरोह का है तो, वे इस से सम्बन्धित नहीं हो सकते।" राजू बोला, साथ ही उसने श्याम से दस वर्ष से होती रही कलाकृतियों की चोरियों के विषय में बताने को कहा।

श्याम ने बताया कि पिछले दस वर्षों में करीब-करीब एक दर्जन महत्वपूर्ण मूल्यवान पर्टिंगों की चोरी हुई है. जो औसतन एक वर्ष में एक पड़ी है. जैसा कि मि. राणादे ने बताया था बहुत से फिल्म अभिनेताओं तथा प्रोड्यूसरों और डाइरेक्टरों को कलात्मक पर्टिंग स एकत्रित करने का शौक है. जाहिर है यह पेन्टिंग घरों में अजायब घरों के समान सुरक्षित नहीं होती. यहाँ इनकी चोरी की गई है, कभी किसी छोटे रोशनदान या

खिड़की से भीतर घुस कर तथा कभी दरवाजे का ताला खोल कर पेन्टिंग स को फ्रेम से काट कर चुराया गया है. इस प्रकार चोर अपना सुराग छोड़े बिना फरार होते रहे हैं. पुलिस का कहना है कि ये कृतियाँ चोरों द्वारा शहर के बाहर कलाकृतियाँ एकत्रित करनेवालों को बेची गई हैं, जो इन्हें अपनी खुशी के लिये अपनी निजी एकत्रित कृतियों में छिपा कर रखते थे. बहुमूल्य कलाकृतियों का कला के जगत में सभी को ज्ञान है इसलिये इन कृतियों को कानूनी तौर पर बेच पाना सम्भव नहीं होगा. ये कृतियाँ अवश्य ही ऐसे व्यक्तियों को बेची गई होंगी जो इन्हें कभी प्रदर्शित नहीं करेंगे।

"और कोई कभी पकड़ी भी नहीं जाई है।" राजू ने प्रश्न किया।

"कोई भी पकड़ी नहीं गई थी जब तक कि तीन पेन्टिंग हरी के घर में नहीं पकड़ी गई थी. फिर उसने उन्हें दो वर्ष पहले हुई एक बहुत बड़ी चोरी की जानकारी दी. बहुत सी नायाब पेन्टिंग एक गैलरी में प्रदर्शित करने के लिये उधार दी गई थी। परन्तु प्रदर्शित होने से पहले ही उनमें से पांच पेन्टिंग जिनकी कीमत ढाई लाख रुपये के करीब थी चोरी चली गई।" "परन्तु इसे भी रिकार्ड नहीं माना जा सकता।" श्याम ने बताया कुछ ही पहले एक ईंगलिश अजायबघर की दरवाजे की पैनल को काट कर किसी ने आठ पेन्टिंग चुराई थीं इनका मूल दस और पन्द्रह लाख के करीब रहा होगा। वे बाद में मिल गई थीं परन्तु कला के बहुमूल्य चोरी का यह रिकार्ड है।" "वाह महिन्द्र बोला पेन्टिंग स के लिये तो यकीमत बहुत अधिक है।"

"ठीक है।" श्याम ने सहमत होते हुए कहा, बहुत सी अमूल्य पेन्टिंग इस शहर में भी चोरी हुई हैं. चोरी इतनी सफाई से की गई है कि पुलिस हर बार चक्कर में पड़ गई थी. अब पुलिस वालों का ख्याल है कि इन सब चोरियों में हरी के पिता का हाथ रहा होगा, परन्तु उन पर पुलिस का शक बिलकुल न होता यदि कुछ दिन पहले वह जीवन बीमा करने . . ."

"रुको एक मिनट," हरी गुस्से से बोला "मैं कह चुका हूँ मेरे पिता ने चोरी नहीं की है, तुम कहना चाहते हो क्यों कि मेरे पिता बीमा करने बड़े-बड़े घरों में जाते थे . . ."

"शान्त हो जाओ।" राजू धीर से बोला "हमें विश्वास नहीं है कि तुम्हारे पिता ने चोरी की है, तुम्हारे घर की रसोई के



लिनोयम फर्श के नीचे पेन्टिंग पहुंचने का प्रश्न भी रहस्यमय है, हमारे पास काफ़ी गुथियों इकट्ठी हो गई लगती हैं पहली... पेन्टिंग किसने चुराई? दूसरे... जहां वे मिलीं वहां कैसे पहुंचीं? तीसरे मि. हरीश या मि. घंटा जो भी उनका असली नाम हो सेर करने जा कर गायब क्यों हो गये?... चौथा... घड़ी-वास्तव में कहां से आई है और इसका

अर्थ क्या है?" और कहते-कहते राजू ने सामने मेज पर रखी घड़ी को छुआ.

"यह घड़ी वास्तव में महत्वपूर्ण है, कल मि. जीटर इसे हम से छीनने को बहुत आतुर थे, इसका अर्थ है, इसमें कोई न कोई विशेषता अवश्य है."

"मुझे खेद है मैंने मि. जीटर को तुम्हारे और घड़ी के विषय में बताया था," हरी

बोला "परन्तु तुम्हारे जाते ही उन्होंने तुम्हारे विषय में मुझ से पूछताछ आरम्भ कर दी थी और उन्होंने मेरी मां को धमकी देकर डाराया भी था. इसलिए मैंने उन्हें बता दिया कि तुम लोग मि. हरीश की एक चिल्लाने वाली घड़ी जो तुम्हें कहीं मिली है कि पूछताछ करने आये थे. और सुनते ही वे भड़क उठे थे

शेष पृष्ठ १४ पर

७० साल से अधिक समय से सब का मनपसंद शरबत

शरबत रूह अफज़ा ७० साल से अधिक समय से लोगों को गर्मी के दिनों में ठंडक और तरावेट पहुंचाता आ रहा है।

शरबत रूह अफज़ा ताज़गी देने वाली १६ जड़ी-बृंटियों और फलों के असली रस से बनता है। यह प्यास ही नहीं बुझाता, बल्कि आप के शरीर को गर्मी का मुकाबला करने की शक्ति भी देता है।

इसे आप चीनी की जगह ठड़े पानी, लस्मी, दूध और आईस-क्रीम में डालिये और भरपूर आनंद लीजियें।

हमदर्द
शरबत
रूह अफज़ा॥
'क्या लाजवाब चीज़ है'



नवी लाटरी

राजस्थान ने ५५ लाख रुपये प्रथम पुरस्कार वाली लाटरी निकाली, लेकिन टिकटों की बिक्री न होने के कारण इन्हें तो लाटरी बार बढ़ानी पड़ी। वास्तव में नकद पुरस्कारों से लोगों का मन उत्का रहा है। लोगों को लाटरियों की ओर दोबारा आकर्षित करने के लिये नये-नये प्रकार के पुरस्कार रखे

जायें। यहां हम कुछ उदाहरण पेश कर रहे हैं। हमारी सलाह मानी गयी तो लोग लाटरियों की टिकटों पर ऐसे ही टूटेंगे जैसे मक्खियाँ गुड़ पर टूटी हैं। लाटरी विभागों की डूबती नावें तर जायेंगी। कई सरकारी विभागों का खर्चा लाटरियों से ही निकलेगा।

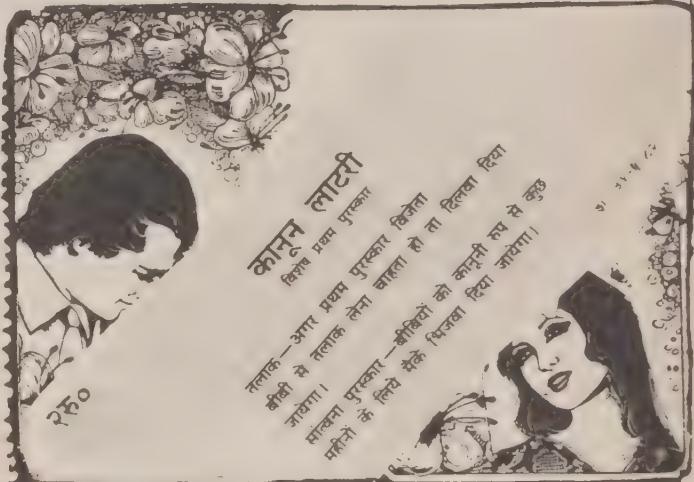
व्यापार व सप्लाई मंत्रालय लाटरी



4 रु

इ. १०-५-८२
दिनीय पुरस्कार

मिठी तेल का बड़ा
कन्दार तथा
सेकड़ों अन्य पुरस्कार



६ मर्याद

शिक्षा विभाग लॉटरी

First Prize



मैडिकल कॉलेज में सीट

Consolation Prize
इंजीनियरिंग कालिज में सीट
४०० अन्य पुरस्कार
विविध कालिजों में घड़ डिग्री वालों को प्रदेश

इ. को. निय. १०-५-८२

पश्चिम बंगाल लॉटरी

दम्पर पल्ला पुरस्कार

एक खून की सजा माफ



दिनीय पुरस्कार:

वैक में डाका डालने पर मजा
की अवधि में कमी

तर्ताय पुरस्कार

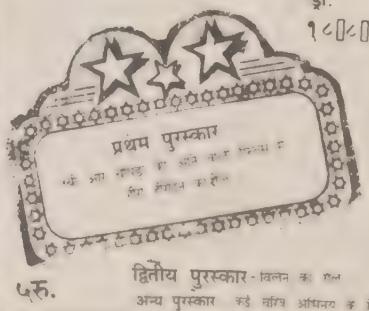
तोड़-झेड़ करने पर पुलिस कोड़े
धारा लागू नहीं करेगी।

2 रु०

इ. १०-५-८२।

बम्बई लाटरी

इ. १०-५-८२



५ रु.



क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड लाटरी

प्रथम पुरस्कार:
भारत-पाक टेस्ट ब्रेक्वला १९८० में स्थान
सांत्वना पुरस्कार... वारहवंश गिलारी का वार
दिनीय पुरस्कार-१... दिवसीय मैचों में मौका
तृतीय पु. तान दिनों के मैचों में वारहवंश गिलारी
की जगह

इ. १०-५-८२।

कैबिनेट लाटरी

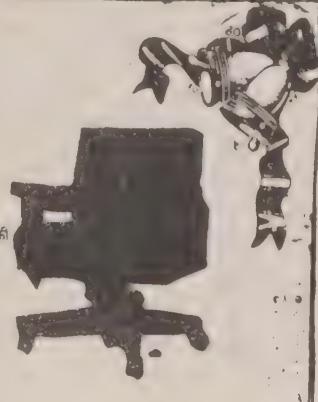
प्रथम पुरस्कार

मंत्रिमंडल में कैबिनेट मंत्री का पद

सांख्यना पुरस्कार — सरकारी प्रतिष्ठानों में बेयर मेनों की पदवियाँ

द्वा. ३०-१२-८२
हजारों अन्य पुरस्कार

१०० रुपये



राजस्थान लॉटरी

विशाल प्रथम पुरस्कार

मिस जयपुर १९८२ से,
प्रथम पुरस्कार विजेता की शादी

सांख्यना पुरस्कार —
शादी के नियंत्रण कार्ड

द्वा. ३०-१२-८२

५०

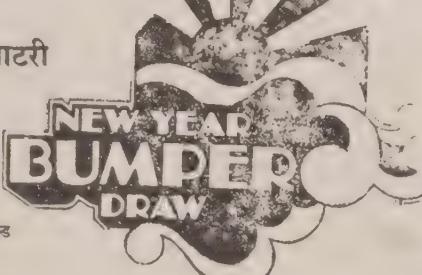


केंद्रीय सेवा लाटरी

प्रथम पुरस्कार

— IAS या IPS में चुनाव
द्वितीय पुरस्कार

— दूसरी श्रेणी के अफसरों के
लिये चुनाव — सेना-पे नायकपिशन्ड
अफसरों का पद।



५० रु.

द्वा. ६-८-८२

५० रु.

चुनाव आयोग लॉटरी

प्रथम पुरस्कार

मध्यसंसद यार्टी का लोकसभा टिकट
सांख्यना पुरस्कार-मनपमन्त यार्टी का विधान सभा का टिकट
अन्य पुरस्कार-अन्य यार्टीयोंके १०० चुनाव टिकट

द्वा. ३०-१२-८२



“खानदानी शफाखाना” की तीन मशहूर हस्तियाँ हकीम हरीकिशन लाल और उनके दो सुपुत्र



डा० राजेन्द्र एबट
G.A.M.S.
M.Sc.A., D.Sc.A.
SEX SPECIALIST



हकीम हरीकिशन लाल
Member Govt. Tibbi
Board, Delhi State
SEX SPECIALIST



डा० विजय एबट
G.A.M.S.,
M.Sc.A., D.Sc.A.
SEX SPECIALIST

शादी से पहले और शादी के बाद
खुई हुई

ताक़त व जवानी

पुनः प्राप्त करने के लिए

(SEX SPECIALIST) से

खानदानी शफाखाना
लाल कुमार बाजार देहली में मिलें या लिखें

हकीम साहब को लिखें नीमतों पुस्तक मुफ्त मिलें

आप कई बार ब्रतानिया, अमरीका, जर्मनी, फ्रांस, व यूरोप
का दौरा करके हजारों मरीजों को नई जवानी व ताक़त
दे चुके हैं। मिलने का समय,

प्रातः ६.३० बजे से १२.३० बजे तक,
सायं ५.०० बजे से ७.३० बजे तक,
इतेवार को केवल प्रातः ६.३० बजे से १२.३० बजे तक

नोट : हमारे शफाखाने से मिलते-जुलते नाम देखकर कहीं गलत जगह न पहुंच जायें। इसलिए याद रखें हमारा शफाखाना जीनत महल के बिलकुल सामने, ग्राउन्ड फ्लोर पर बरामदे के नीचे लाल कुमार बाजार में है। शफाखाने के बाहर दोनों तरफ लगी दुई हकीम साहब की फोटो जरूर देख लें। हमारे शफाखाने की किसी जगह कोई भी झाँच व नुसाइदा नहीं है

मंनेजर :

खानदानी शफाखाना रजि० (एयरकन्डीशन्ड)

1044, लाल कुमार बाजार, दिल्ली-6, फोन 232598

[नोट : अजमेरी गेट व फतेहपुरी (चांदनी चौक) के बीच में]

सत्तान के इच्छुक स्त्री व पुरुष मिलें या लिखें

इलाज रो. ११८८८ :

- नवाबी शाहाना इलाज 3100 रु
- खानदानी शाहाना इलाज 2001 रु
- लन्दन स्पेशल इलाज 999 रु
- अफ्रीका स्पेशल इलाज 550 रु
- मध्यम इलाज 250 रु ग्राम इलाज 125 रु
इसके ग्रामावा लास नवाबी शाहाना स्पेशल
इलाज भी तैयार है।

पृष्ठ ११ से आगे

तुम्हारा कार्ड मुझ से छीन कर तुरन्त चल पड़े थे।

"भाग्य से हसा" उस समय हमारी सहायता को यहाँ था," राजू बोला, "अच्छा हरा बताओ तुम्हारे घर में रहते हुए कभी मि. जीटर नहीं 'देहजनक कार्य' करते हैं?"

"वे रात को घर के बहुत घक्कर लगते हैं," हरी बोला, "उनका कहना है वे एक लेखक हैं और रात को उन्हें नींद नहीं आती। एक रात मैंने उन्हें दिवारों को ठोक ठोक कर बजाते देखा था मानो वे कुछ ढूँढ रहे हैं।" "हूं, राजू ने होठ दबा कर सोचना आरम्भ किया। मुझे एक विचार आया है परन्तु हो सकता है गलत हो। चलो काम में ही लगते हैं। मैं सोचता हूं जो चोरियाँ युक्ति से न पकड़ सकी उनका हम कैसे पता लगा सकते हैं। परन्तु घड़ी की समस्या कुमार मुझने है, अभी तक हमें यह भी मालूम नहीं हुआ। घड़ी आई कहाँ से है तो अब इसी पर ध्यान देते हैं।"

"उससे मेरे पिता को क्या सहायता मिलेगी?" हरी गर्म हो कर बोला। "वे जेल में बन्द हैं और तुम घड़ी की समस्या सुलझाने में लगे हो।"

"हमें कहीं तो शुरुआत करनी ही होगी!" राजू ने उस समझाया। "यहाँ हमारे पास कई समस्याएँ हैं और मेरे ख्याल से घड़ी को इन सब से ही सम्बन्ध है।" "ठीक है," परन्तु तुम घड़ी का क्या पता लगाओगे, यदि ये तुम्हें कूढ़े में ही मिली हैं?" हरी बड़बड़या।

"हमारे पास घड़ी के नीचे चिपका एक मंदेश है।" गज़ बोला। और साथ ही उसने मेज की एक गुप्त दराज खोला, जिसमें वह

छोटी-छोटी वस्तुएँ सुरक्षित रखता था, घड़ी के नीचे चिपका पाया कागज निकाला। उसने संदेश दुबासा जौर से पढ़ा।

प्यारे राजा,

इला से पूछो।

गोवर्धन से पूछो।

मीरा से पूछो।

फिर अमल करो नर्तीजा दख का तुम भी धूपन हो जाओगे।

"मैं अब भी पूछता हूं यह लोग कौन है?" माहिन्द्र बोला। हम इनका पता कैसे लगा सकते हैं और यदि यह लोग मिल भी जायेंगे तो इनसे पूछ क्या?"

"एक-एक बात कर सोचो" राजू बोला। "मेरे ख्याल से संदेश राजा के लिये है तो इसका नर्तीजा यह निकलता है कि संदेश के साथ यह घड़ी राजा को भेजी गई होगी। चलो राजा का पता लगाते हैं।"

"परन्तु महिन्द्र के शब्दों में कैसे? श्याम बोला।" हमें अबल से काम लेना चाहिए।" राजू बोला, "राजू मि. हरीश या चंदू घंटा का मित्र होगा तभी उन्हें केवल राजा कह कर सम्बोधित किया जाएगा। यहाँ तुम मि. घंटे की पतों की डायरी लाय हो?"

"मुझे उनकी कोई डायरी नहीं मिली। तुम पीछे की दराज में पड़ा एक कागज मिला है जिस पर उन्होंने नववर्ष पर कार्ड भेजने के लिये उपने पांच तों के नाम लिख रखे हैं," और उसने एक मुड़ा हुआ कागज राजू को दिया।

राजू ने कागज को सीधा कुर फैलाते हुए कहा, मि. घंटे के मित्रों के नाम कार्ड भेजने की लिस्ट में होने चाहिए। इस सूची में

लगभग सौ नाम पतों सहित टाइप हुए हैं। इसमें राजा का नाम ढूँढ़ते हैं। "इसमें एक इला और दो गोवर्धन और तीन मीरा हैं परन्तु राजा तो कोई नहीं दिखाई दे रहा," श्याम बोला।

"तुम ठीक ही कहते हो राजा का नाम कहीं दिखाई नहीं दे रहा" राजू बोला।

"ठहरो! ठहरो! एक क्षण रुको" श्याम बोला, "एक महाराज कुमार है।"

महिन्द्र ने पूछा इससे क्या मतलब है?

"महाराज और राजा एक से ही अर्थ वाले शब्द हैं।"

महाराज कुमार का उपनाम राजा होना बहुत ही स्वभाविक है।" श्याम बोला।

"मुझे तो इसमें काइ तुक नहीं दिखाई देती," हरी बड़बड़या परन्तु राजू एक कार्ड पर महाराज कुमार का नाम और पता नोट कर रहा था।

"बहुत ही अच्छा निष्कर्ष निकाला है तुमने," राजू ने श्याम से कहा। "हमें यही एक सुराग मिला है जिसके सहरे हमें आगे बढ़ना है। अब हमें देखने हैं इला, गोवर्धन और मीरा, ये रही इला मेहरा शालीमार के उत्तरी भाग में, और यह हैं दो गोवर्धन दोनों ही करोलबाग की ओर रहते हैं। हम चार लोग हैं। मेरे विचार से हम दो टीमों में बंट जाते हैं। श्याम तुम और हरी, एक टीम में हो सकते हो क्योंकि हरी के पास कार है। माहिन्द्र और मैं दूसरी टीम बनाते हैं, मैं किराये की गाड़ी बाले मि. गणेश को फोन कर कार मंगवा लेता हूं।"

"हम इन लोगों से मिल कर दोपहर को

शेष पृष्ठ ३४ पर

बड़द करो बकवास

बन मुड़ी लाग्ब्र की...
खुली तो यह खाक की

बन्द करो बकवास! ऐसे उल्टे गाँव होंगे
फिर हमारी पार्टी का चुनाव टिकट तुम्हें खाक
मिलेगा!

CONGI



हिलस्टेशन का पुट

गर्भियां आईं और लोग पड़ौसियों से सूटकेस और होलडाल उधार लेकर दफ्तर में एडवाइस लेकर हिलस्टेशनों की ओर रवाना हुये। पजा गर्भियों में ठंडे हिलस्टेशन पर समय बिताने में इतना नहीं है जितना

वहां से लौट कर अपने पड़ौसियों या दफ्तर वालों में हिलस्टेशन का रौब झाड़ने में। बात-बात पर लोगों को यह जताने का कि में हिलस्टेशन हो आया है। हमारे कुछ सुझावों का प्रयोग भी कर के देखें।

यह मनाली है, उससे छोटा नैनीताल कुमार, उससे छोटा गुलमर्ग मिंह और सबसे छोटी मसूरी कुमारी

अच्छा हुआ यह एक्सीडेंट शिमला में नहीं हुआ वर्ना लकड़ बाजार से नीचे गिरा होता।



हर स्थिति में हिलस्टेशन का तड़का डालना न भूलें।

ऐसे ही अमरुद हमने दर्जिलिंग में दो रुपये दर्ज खरीद थे



दूसरों को सुना कर हिलस्टेशन के भावों से तुलना करें।

जब से हम काश्मीर गये मुझे तो रोज एक सेव खाने की जैसे आँख ही पड़ गयी है।



मान-पान में भी हिलस्टेशन जरा धूमें।



बच्चों के नाम हिलस्टेशनों पर रखें जिस वर्ष जिस हिलस्टेशन पर तो आये हों उस वर्ष के बच्चे का नाम ही रखें।

ऐ लगदा तां अपना भस्त राम है।



हिलस्टेशन से कुछ न कुछ जरूर लायें। वहां का डैस। वापिस आकर दिन में एक बार उसे पहन कर जरूर बाहर निकलें।

इसने आपकी खिड़की का शिशा ताढ़ा? मैं इस नी पिटाई उस छड़ी से करता हूँ जिसे हमने शिमला में पंद्रह रुपये में खरीदा था। मांग तो वह तीस रुपये रहा था।



हिलस्टेशन में लाई चीजों का जिक्र करने का कोई मैका न चूकें।

नव्यों और लैड

नमक का हमारे शरीर पर क्या प्रभाव होता है?

उच्च रक्तचाप या हाई ब्लडप्रेशर एक ऐसा घातक रोग है जिससे (अक्सर बिना ही किसी चिन्ह के) गुर्दे फेल हो जान रक्ताधात अथवा हृदय रोग हो जाते हैं। इसका मुख्य कारण “अधिक नमक” जिसका ४० प्रतिशत सोडियम है, उच्चरक्तचाप का मुख्य कारण है और हम लोगों में अधिकतर शरीर की आवश्यकता से लगभग २०-३० गुना अधिक नमक खाते हैं।

शरीर को कार्य करने के लिये कुछ नमक की आवश्यकता है। सोडियम पोटेशियम और क्लोराइड का मिश्रण शरीर के अणुओं के भीतर और बाहर पानी तथा इलैक्ट्रोलाइट्स की मात्रा का नियंत्रण करने का आवश्यक मिश्रण है। इन न्यूट्रिट्स के बिना शरीर का कार्य शीघ्र ही रुक जायेगा। परन्तु जीवन यापन के लिये वास्तव में केवल २२० मिलीग्राम नमक (एक छोटे चमच का दसंवा भाग) नित्य की आवश्यकता होती है।

कुछ ही लोग इस बात को अनुभव करते हैं कि हम प्रतिदिन कितना नमक खाते हैं। यदि हम दिखाई देने वाला नमक नहीं के बरबर भी खाते हैं तो भी हमें नहीं मालूम हम कितना नमक शरीर में एकत्रित कर रहे हैं जो प्रोसेस्ट मांस, बने हुए भोजन और पनीर इत्यादि के साथ शरीर में जाता है। उदाहरण के लिये, १४ आलू के चिप्स में १९० मि.ग्रा. नमक होता है तो २८ ग्राम नमकीन मुँगफली में १३२ मि.ग्रा., दो डबलरोटी के टुकड़ों में २३४ मि.ग्रा. तथा २४ ग्राम कोर्न फ्लेक्स में २४८ मि.ग्रा. और आधा प्याला घर बने पनीर में लगभग ४३५ मि.ग्रा. नमक होता है। इससे जाहिर है हमें नमक का प्रयोग करते समय कितना सावधान रहना चाहिए।

प्र. : घरों के भीतर नलसाजी की खोज कब और किसने की थी?

उ. : घरों में नलसाजीका अर्थ आमतौर पर एक ऐसी प्रणाली से है जिसके दो भाग हैं। इनमें से एक सिस्टम उन पाइपों और वैल्वों से सम्बन्धित है जो सड़कों के नीचे के मुख्य नल से पानी हमारे घरों के भीतर ला कर, घर के भीतर सब स्थानों पर पहुंचाता है तथा

दूसरा सिस्टम उन पाइपों और नलियों का है जो घर के भीतर का गंदा पानी ले जा कर सड़क के नीचे बिछी गंदी नलियों में डाल देता है।

नलसाजी का सबसे पुराना प्रमाण पुरातत्व खोज कर्ताओं द्वारा मेडिटरेनियन सागर के एक टापू ‘क्रेट’ की खोज से प्राप्त हुआ है। इन टापू पर खुदाई में एक ४,००० वर्ष पुराने महल के अवशेष प्राप्त हुए हैं जिसमें पानी लाने तथा ले जाने का पूरा सिस्टम बना हुआ था। पानी का सिस्टम कन्ड्यूइट से बना था जो पत्थर से बनी नालियां होती हैं जिनमें पानी बहता है। इन कन्ड्यूइट्स की टंकियां पत्थर की बनी हुई थीं जिनमें बारिश और पहाड़ों से आने वाला पानी एकत्रित होता था फिर पत्थर की खड़ी नालियों द्वारा इसे नीचे ले जा कर गुसलखानों इत्यादि में ले जाया जाता था। गंदा और बेकार पानी टेरा कोटा के बने पाइपों द्वारा घर से बाहर ले जाया जाता था। टेरा कोटा एक प्रकार की पकाई हुई मिट्टी होती है। आश्चर्यजनक बात यह है कि यह टेरा-कोटा पाइप ऐसे बने हुए थे कि इन्हें आसानी से लगाया जा सकता था। हर पाइप का एक सिरा ऐसा बना हुआ था कि वह दूसरे पाइप में फिट हो जाये और फिर पाइपों को सीमेंट जैसी मिट्टी से जोड़ा गया था।

लैड के पाइपों का इस्तेमाल सब से पहले रोम में आरम्भ हुआ था वहां इन लैड के पाइप को लगाने वाले मिस्त्रियों को ‘प्लम्बरियस’ मतलब लैड का काम करने वाला कहते थे। इसी शब्द से अंग्रेजी का शब्द प्लम्बर और प्लम्बिंग भी आरम्भ हुए थे।

पाइप में लैड का प्रयोग अब भी किया जाता है। नलसाजी में प्रयोग होने वाले अन्य धातु हैं-लोहा, तांबा पीतल, कच्चा लोहा। रोड़ी तथा प्लास्टिक भी आधुनिक नलसाजी के पाइप बनाने में महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं प्लास्टिक के बने पाइपों में जंग इत्यादि लगाने की समस्या से बचा जा सकता है।

प्र० : संसार की सबसे ऊंची झील कहां है और कितनी ऊंचाई पर स्थित है?

उ० : दक्षिणी अमरीका के भीतरी भाग में बोलिविया का प्रजातन्त्र है, इसके और पेरु जो इसके दक्षिण में है एक टीटीकाला नामक झील है। यह दक्षिणी अमरीका की सबसे बड़ी झील है, परन्तु यह झील केवल अपने नाप के लिये बड़ी प्रासद्ध नहीं है, जो ३००० वर्ग मील से भी अधिक है परन्तु यह झील

समुद्र की सतह से १३,००० फीट ऊंचाई पर स्थित है। इस ऊंचाई का अनुमान लगाने के लिये कहा जा सकता है कि ऐलप्स की कई चौटियों की इतनी ऊंचाई है। स्विटजरलैंड अंग्रेजों पर्वत पर चढ़ने पर भी हम केवल १३,६५८ फीट समुद्र सतह से ऊपर ही पहुंचते हैं। परन्तु यूरोप में इस ऊंचाई पर पहुंचने पर हम धनी न पिघलने वाली बर्फी में पहुंच जाते हैं, जहां कुछ देर भी ठहर पाना अत्यन्त कठिन काम है। परन्तु दक्षिणी अमरीका में समुद्री सतह से इतनी ऊंचाई पर स्थित इस झील पर न केवल लोग रहते हैं, बरन इसमें स्टीम-बोट भी चलती दिखाई देती है।

यहां के निवासियों की एक विशेष प्रकार की स्वयं बनाई बोट होती है जो वहीं पैदा होने वाली एक प्रकार की धास से बनाई जाती है। यह झील पेरु और बोलिविया के बीच की पर्वत शृंखलाओं पर की एक सपाट धरती पर स्थित है। बोलिविया की राजधानी लापाज नगर १२,७०० फीट ऊंचाई पर है। इस नगर से झील के किनारे तक रेल जाती है। कल्पना करने से की ऐलप्स पर्वत की चढ़ाई और बादलों से ऊपर भी उसी ऊंचाई पर पहुंच जाना बहुत ही अजीब लगता है।

परन्तु टीटीकाला झील एक उष्णकटिबन्धी देश में है जो बिलकुल ही अलग बात है। बोलिवियन और से रेल से झील के तट पर पहुंच कर यात्री झील पार कर पेरु में पहुंच सकता है। झील में सूर्य तथा चन्द्रमा के सुन्दर टापू दिखाई देते हैं। वहां रहने वाले भारतीय इन स्थानों को पुण्य मानते थे।

यहां फलौमिन्टों तथा अन्य सुन्दर पक्षियों के झुंड भी दृष्टिगोचर होते हैं झील अभी भी बहुत बड़ी है परन्तु ऐसा कहा जाता है कि यह छोटी होती जा रही है। इस झील में पिघलती बर्फ का पानी निरन्तर आता रहता है, इसी कारण इसका पानी पूरे वर्ष अत्यन्त ठंडा रहता है, फिर भी पानी का तापमान कभी भी इतना कम नहीं होता कि वह जम जाये। यहां की शान्ति अक्सर तेज हवाओं और ग्रीष्म ऋतु के तेज तूफ़नों से भंग होती रहती है।

क्यों और कैसे?

दीवाना पाखियां
८-बी. वहादुरशाह जफर मार्ग,
नई इलाली-१००००.

अगर जानवरों के कुछ फौजर मनुष्यों में आजाएं

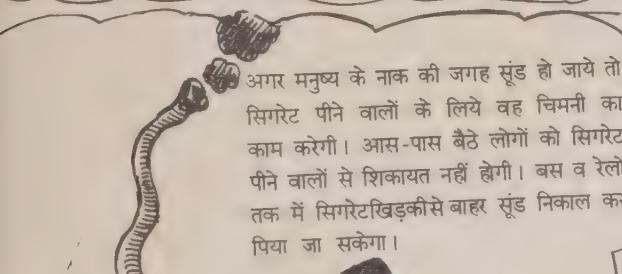
यदि जानवरों के कुछ अंग मनुष्यों में विकसित हो जायें तो मानव मात्र की कितनी भलाई होगी!



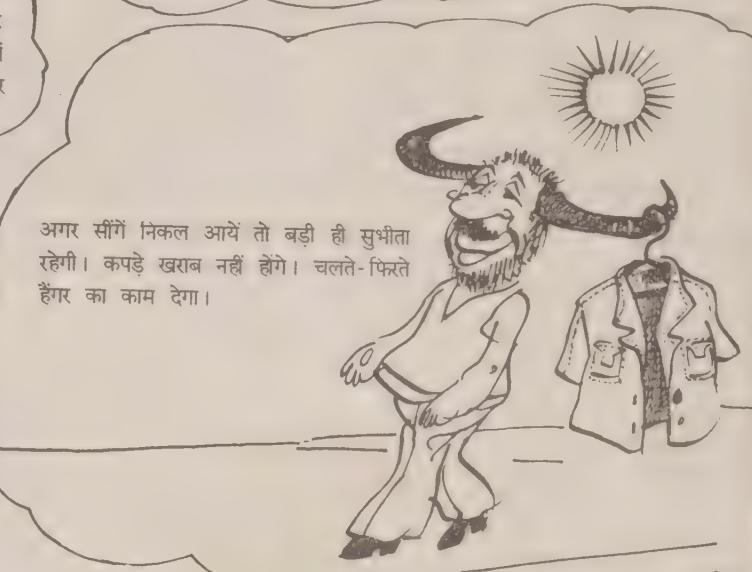
आजकल स्कूटर दैनिक जीवन की एक आवश्यकता हो गयी है। स्टार्ट करने के लिये किक मारना पड़ता है। अगर एक टांग गधे की हो तो दुलती मारने में बड़ी आसानी रहेगी।



अगर हमारे गिलहरी की तरह की पूँछ निकल आये तो मर्द शेविंग ब्रुश का काम ले सकता है। औरतें झाड़न का काम ले सकती हैं। इसके उपयोगों की सीमा नहीं होगी।



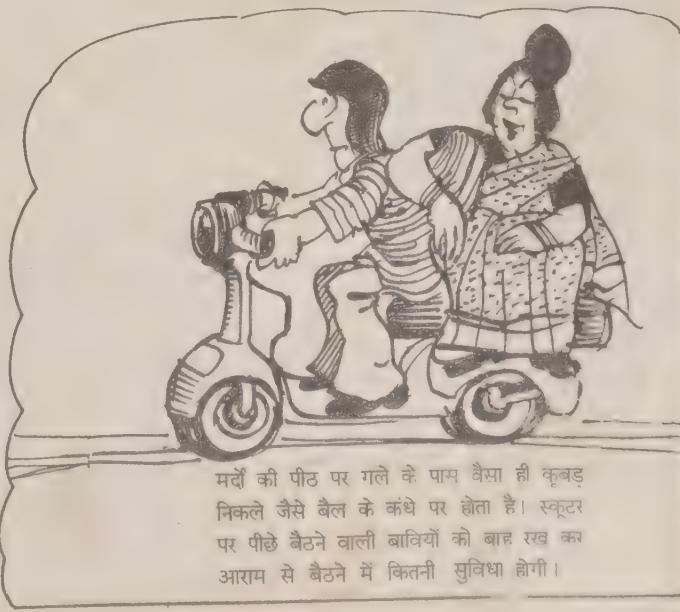
अगर मनुष्य के नाक की जगह सूँड हो जाये तो सिपरेट पीने वालों के लिये वह चिम्पी का काम करेगी। आस-पास बैठे लोगों को सिगरेट पीने वालों से शिकायत नहीं होगी। बस वे रेलों तक में सिपरेटिबिड़ी की से बाहर सूँड निकाल कर पिया जा सकेगा।



अगर सोंगों निकल आयें तो बड़ी ही सुभीता रहेगी। कपड़े खराब नहीं होंगे। चलते-फिरते हैंगर का काम देगा।



जो गंजे हो जाते हैं उनके सिर पर कम से कम मुँगे जैसी कलागी ही निकल आये तो लड़ने पर दूसरा यह तो कह सकेगा कि तेरी कलागी उत्तराड़ कर फैक ढूंगा।



मर्दों की पीठ पर गले के पास बैसा ही कूबड़ निकले जैसे बैल के कधे पर होता है। स्कूटर पर पीछे बैठने वाली बावियों को बाहर रख कर आराम से बैठने में कितनी सुविधा होगी।

आपस की बातें

मध्यन-प्रश्न के बल
पोस्ट कार्ड
पर ही भेजें।

पंडित मेवा लाल 'परदेसी'—महोबा : क्या दीवाना पागली खाने में भी पढ़ा जाता है?

उ० : बड़े शौक से पढ़ा जाता है. इसे पढ़ कर बहुत से पागल भले चंगे हो कर दीवाने हो चुके हैं.

रामकुमार, आशापुर—फैजाबाद : दीवाना, फ्रैंडस क्लब में आप लड़कियों के फेटो क्यों नहीं देते?

उ० : क्योंकि हम दोस्ती के इस करोबार में दुश्मनी मोलं लेने से डरते हैं.

किशोर जेस्वानी—ग्वालियर : चाचा जी, आप का मनपसंद नेता और अभिनेता कौन है?

उ० : नेता, सुनील दत्त और अभिनेता राजनारायण.

कुलवंत शर्मा—जबलपुर : नफरत मुहब्बत की प्रथम झीढ़ी है. तो मुहब्बत की अंतिम सीढ़ी कौन सी है?

उ० : पता नहीं, आजकल कुतबमीनार की सीढ़ियों पर चढ़ना मना है.

सुरेन्द्र गौसाई—रोहतक : माई डीयर चाचा जी, अगर चाची आप से जोरू का गुलाम फिल्म देखने के लिये कहें तो आप क्या करेंगे?

उ० : इस बात का मातम करेंगे कि जब हमें देख लिया तो फिल्म पर पैसे क्यों लुटाये जा रहे हैं?

प्रह्लाद जसवानी, कृष्ण कहैया—मण्डला : चाचा जी, मनुष्य समय से कब डरता है?

उ० : जब समय प्रलय लाने की धमकी देता है यह धमकी उसने अभी पिछले दिनों दी थी, जब दस ग्रहों ने अपना संयुक्त मोर्चा बना कर हमारा कबाड़ा करने की ठानी थी. अब ज्योतिषि विद्या के अनुसार पांच साल साल बाद यह ग्रह फिर जनता पार्टी की तरह एक झँडे तले आ कर धरती की खाट खड़ी करने की कोशिश करेंगे।

अमरनाथ चन्द्रेल—विलासपुर : मैं एक लड़की से प्रेम करता हूँ. वह भी मुझ से प्रेम करती है, पर उसके घर वाले हमें मिलने नहीं देते. बताइये मैं क्या करूँ?

उ० : वही, जो दीवाना मैं प्रकाशित लल्ला की लवस्टोरी में लल्ला किया करता है.

ओम प्रकाश भाटिया, 'टीटू'—पहाड़ी धीरज : चाचा जी, क्या आप केवल पौस्टकार्ड पर लिखे प्रश्नों के उत्तर देते हैं?

उ० : हम अच्छे प्रश्नों के उत्तर देते हैं. चाहे कार्ड पर लिख कर भेजे गये हों, या लिफाफे में बन्द करके.

राजेन्द्र के. लाड—जबलपुर : यह कहावत आज के युग में कहां तक सत्य है?

“टाई अक्षर प्रेम का पढ़े तो पंडित होय,”

उ० : लेकिन इतना देख कर पथराव न सर पर होय, यहां तक सत्य है.

अशोक जौहरी, “गगन”—देहरादून :

प्यारे चाचा जी, मुझे ऐसा कौन सा काम करना चाहिए कि लोग अपने प्यारे नेता राजनारायण को भूल कर मुझे ही महत्व दें?

उ० : सर के बल सङ्कों पर उल्टे चलिये और नारा लगाइये कि आप धरती पर गिरते आसमान को रोक रहे हैं.

राजेन्द्र पाल अरोरा—रुद्रपुर :

यदि यह दुनिया ही न बनी तो क्या होता?

उ० : दुनिया बनाने वाले को आज अपनी भूल पर पछताना न पड़ता, यह देख कर कि बैठे बिठाये उस ने दुनिया बना कर यह किस अड़ंगे में अपनी जान फंसा ली.

केवल प्रकाश दुआ—काशीपुर :

क्या मनुष्य को उम्र के साथ-साथ बदलते रहना चाहिए?

उ० : जी हाँ. केवल दीवाना को छोड़ कर केवल प्रकाश जी, जो आठ साल से लेकर साठ साल तक बराबर एक जैसा मनोरंजन करता है।



कहते थे दिल का तुम हो सहारा जवाब दो, अब है कहां वो कौल तुम्हारा जवाब दो. कश्ती जहां पे हम ने लगाई थी प्यार की, छीना है तुम ने क्यों वो किनारा जवाब दो. माना लबों पे मोहर है लेकिन कभी तो दोस्त आंखों से एक बार खुदरा जवाब दो.

आपस की बातें

दीवाना पाश्चिम

८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग
नई दिल्ली-११०००२.

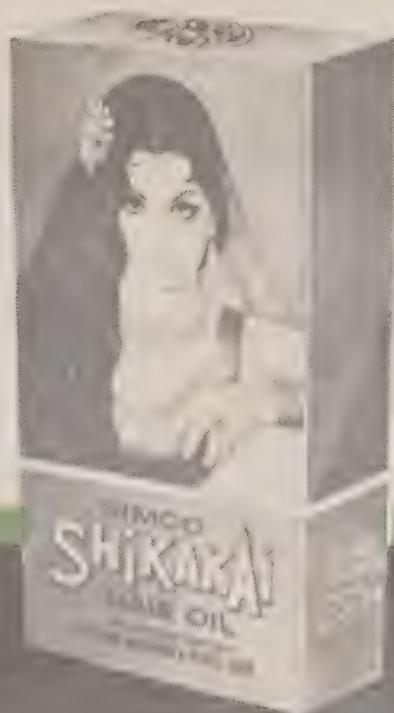
बालों की मुख्यता का गुज़ा

सिमको

शिक्काइ

केश तेल
मधुर सुगन्धित

लम्बे चमकीले और
बालों के लिए



शिमला कैमिकल्स (प्रा०) लि०
5428, कृष्ण रहमान, चॉन्डनी चौक,
दिल्ली-110 006.

लड़कियों को छेड़ने से बचाओ

सरकार सब मजनूं टाइप जाने-माने शोहदे छैला टाइप लड़कों को नौकरी दे। उन्हें लड़की छेड़ इन्सपेक्टर बनाये। रनकी इयूटी लड़कियों को छेड़ना होगा। वह लड़की छेड़ना एक टम बन्द कर देंगे क्योंकि कोई सरकारी कर्मचारी अपनी इयूटी नहीं करता।



लड़कियों को छेड़ने की घटनाओं में निरन्तर वृद्धि हो रही है, बसों में तो लड़कियों के लिये सफर करना एक यातना बन गया है। सरकार, पुलिस और समाज सुधारक बहस करते-करते थक गये कि इस समस्या

से कैसे निपटा जाये। कोई हल नहीं मुझे रहा है। हम यहां कुछ अचूक फार्मूले दे रहे हैं जिन्हें आजपाया जाये तो लड़कियों को छेड़ने की घटनाओं में चमत्कारी गिरावट आयेगी।

सरकार जिस चीज का प्रचार करती है उसका उल्टा ही प्रभाव पड़ता है। जब से सिगरेट व शाराब की डिब्बी/बोतलों पर “इसे पीना स्वास्थ्य के लिये हानिकारक है।” लिखवाया जाने लगा इन चीजों की खपत बढ़ गई है। लड़कियों पर भी सरकार चित्र में दिखाया लेबल लगवाये। लोग अपने स्वास्थ्य को हानि पहुंचाने के लिये लड़कियां नहीं छेड़ते।



लड़कियां छेड़ने वाले प्रायः कॉलिजियन होते हैं। और कॉलिजियन होमर्क करते। प्रोफेसर सब लड़कों को लड़कियां छेड़ने का काम बांबूर होमर्क दें। लड़के लड़कियों को नहीं छेड़ते।



अह! यह है
आज का होमर्क,
नहीं करूँगा।
मैं पिक्चर
चुनने जाऊँगा।



लड़कियां छेड़ने वालों का एक खास तबका है। ट्रेड यूनियन लीडरों को इस तबके की भी यूनियन बनाने के लिये प्रोत्साहित किया जाये। अगर इनका यूनियन बन जाता है तो हमारी समस्या हल हो जायेगी। लड़कियां छेड़ने वाले अपनी यूनियन की मांगों को लेकर प्रायः हड़ताल पर रहेंगे। हड़ताल पर जाने का अर्थ है वह लड़कियां नहीं छेड़ते।

हड़ताल जारी रहेगी।

हमारी मांगें पूरी करो



लड़कियां छेड़ना

ही शाराफ़ है।



इस बात का जोर-शोर से प्रचार किया जाये कि लड़कियां छेड़ने का नाम ही शाराफ़ है। आप देखेंगे कि शीघ्र ही लड़कियां छेड़ने की घटनायें लगभग समाप्त हो जायेंगी। क्योंकि शराफ़ इस दुनिया से खत्म हो रही है।

प्रसिद्ध व्यक्तियों की याद में आयोजित होने वाले टूर्नामेंट और कप प्रतियोगिता हम देखते या सुनते आ रहे हैं। खेलों के क्षेत्र में बदनाम व्यक्तियों के नामों पर भी कप प्रतियोगितायें होनी चाहिए। आखिर प्रसिद्ध विद्वान अभिताभ बच्चन ने कहा भी है कि उनके अंगना में तुम्हारा क्या काम है और जो है नाम वाला वही तो बदनाम है। चलिये कुछ ऐसे कपों और शील्डों की कल्पना करके देखें कैसा लगता है।

बदनाम कप



जनता पार्टी
बास्केट बाल कप

देश में जिन दो प्रदेशों के बास्केटबाल फेडरेशनों में सबसे अधिक आपसी झगड़े मार-पीट चल रहे हैं। उन प्रदेशों की बास्केटबाल टीमों के मध्य यह सीधा फाइनल खेल हो व विजेता को कप मिले।



बिल्ला रंगा
हॉकी
कॉल्ड कप

बिल्ला ठिगना था और रंगा लम्बा। यह टूर्नामेंट लम्बे खिलाड़ियों की टीमों और उन्हें खिलाड़ियों की टीमों के बीच खेला जाये।



अंतुले
सीमेंट कांड कप



छविराम
शूटिंग ट्रॉफी

सीमेंट से बना यह कलात्मक कप मैच भारत की विभिन्न सीमेंट निर्माता कम्पनियों की क्रिकेट टीमों के मध्य खेला जाये, निर्धारित ओवरों के आधार पर।

यह ट्रॉफी डाकू छविराम से मिले वृथियारों के स्टील को गला कर बनायी जाये और अंग्रेज भारत स्तर पर शूटिंग प्रतियोगिता आयोजित कर विजेता को दी जाये।

इन्कमटैक्स विभाग और शिपिंग कारपोरेशन की वालीबाल टीमों के बीच मैच आयोजित कर इस शानदार कप का निर्णय हो।



डाक्टर धर्म नेता
मैमानियल
वालीबाल कप



चारन संग शोभगाज
चैलेंज
शील्ड

इस शील्ड का नियम पूर्ण रूप से भल विभाग के बीच गिल्ली दड़ मैच होना किया जाये।

Relax
Jeans

the ego boosters



W
E
N
D

Sengsäte

1917



अप्रैल फूल का दिन

जन दिवस

पहली अप्रैल फूल का दिन लोग कई प्रकार से एक दूसरे को मूर्ख बना कर मनाते हैं। देखा जाये तो हम में से हर कोई किसी न किसी को मूर्ख बनाता ही रहता है। इस की ध्यान में रख कर क्यों न प्रथम अप्रैल का मूर्ख दिवस एक राष्ट्रीय पर्व के रूप में मनायें और ऐसे-ऐसे आयोजन किये जायें कि मूर्ख दिवस साकार हो जाये। मूर्ख दिवस की आयोजनाओं की कल्पनाओं का छोटा सा झरोखा प्रस्तुत है।



ब्राह्मण अपने इन्स्प्रेक्टर्स रिटर्न फॉर्म १ अप्रैल को ही इसमें सारी मृच्यनाये मरकार को मूर्ख बनाने के प्रयत्न बाल्क ही हो जाती है।



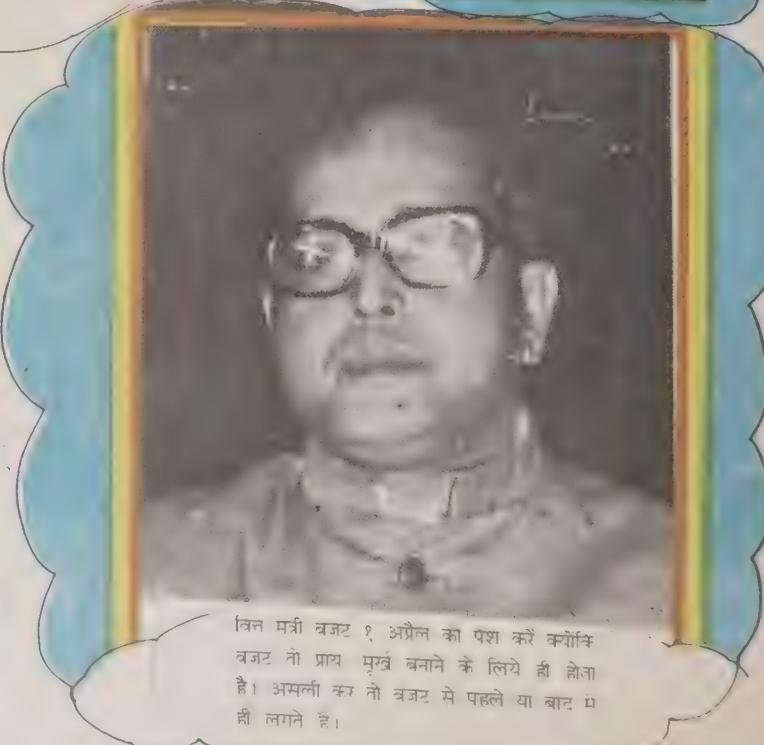
१ अप्रैल साधारण जन दिवस के रूप में मनाया जाये क्योंकि साधारण जनता ही है जो सबसे ज्यादा मूर्ख बनती है।



राजनीतिक पार्टियां अपने चुनाव घोषणा पत्र प्रथम अप्रैल को ही जारी करें। यह सरो वायदे वास्तव में जनता को मूर्ख बनाने के लिये ही होते हैं।



महाराजा ने अप्रैल का दिन को अपनी मारी ग़ज़ी का दिन कहा है।



विन चैरी वर्जट १ अप्रैल का पश्च करें क्योंकि वर्जट तो प्राय मूर्ख बनाने के लिये ही होता है। अमली कर तो वर्जट से पहले या बाट में ही लगते हैं।



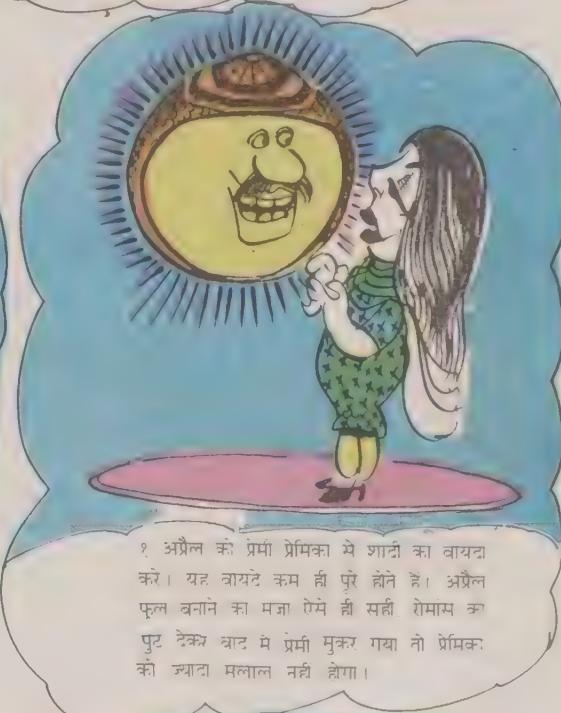
१ अप्रैल को मौसम विभाग के कर्मचारियों की प्लेटो अखबारों में छपे ताकि अप्रैल फूल दिवस को लोग यह तो जान जायें कि वर्ष भर उन्हें कौन उल्लू बनाता रहा है।



मछली पकड़ने के शौकिनों को १ अप्रैल को अनिवार्य रूप से फिशिंग के लिये भेजा जाये। शाम को आकर वह घर वालों को उस हैल के बराबर मछली के लारे में बतायें जो बच निकले।



हर अफसर मातहों को मृश्व-गधा समझता है।
१ अप्रैल को वह स्वयं गधे का मुखौटा पहन कर यात्रा जाये और वार्की गधों का मनोरजन करे।



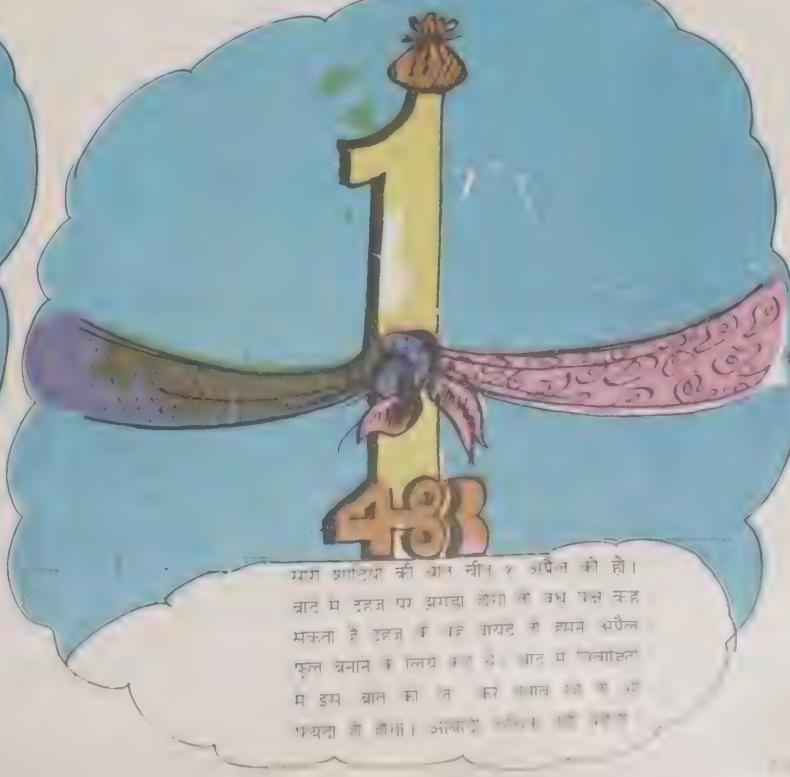
१ अप्रैल को प्रेमी प्रेमिका से शादी का वायदा करे। यह वायदे कम ही पूरे होते हैं। अप्रैल फूल बनाने का मजा ऐसे ही मही रोमास का पुट टेके बाट मे प्रेमी मुकर गया तो प्रेमिका की ज्यादा मलाल नहीं होगा।



भारत पक

युद्ध नहीं संघर्ष

प्रथम अप्रैल को यह संघर्ष हो जानी चाहिए। टूट जायें तो बाट मे कह मरकते हैं हमने तो अप्रैल फूल बनाया था।



मग शास्त्री की यात दीन १ अप्रैल की हो। बाट मे यहज पर झागडा लेना तो उध उक कह मरकता है इहज के १२ बायदे मे स्पन सपैल फूल बनाने के लिये ३ बाट मे बायदा बाट मे इस बाट का तो उक उगव देने के लिये बायदा हो जाएगा। भालोके लिये १२ बाट



अधिकतर पलियां अपने पतियों को मूर्ख समझती हैं। १ अप्रैल अतिरिक्त करवा चौथ के रूप में मनवें व गधे की आरती उतारें।



हिन्दू महासभा व जमाति इस्लामी प्रथम अप्रैल को मिल कर बैठें व आपस में कभी न लड़ने की प्रतिज्ञा करें।



प्रेमिका भी प्रेमी से अपनी वफ़ओं के बास्ते १ अप्रैल को ही दे। यह रोमांटिक अप्रैल फूलिंग होगी।



१ अप्रैल को शिकारी अपनी कहानियां सभाओं में सुनायें। शिकारियों की ज्यादातर कहानियां कपोल कल्पित होती हैं।



बुवल प्रथम अप्रैल को ही सरकारी आंकड़े प्रसारित किये जायें जिनके आधार पर दावा किया जाता है कि माहिराई कम हो रही है व भ्रष्टाचार घट रहे हैं। अच्छा मजाक रहेगा।



अगले अंतर्राष्ट्रीय मुकाबले के लिये हँकी संघ टीम की घोषणा १ अप्रैल को करे और आशा व्यक्त करे कि इस बार तो गोल्डकम हमारा ही होगा।

यह सच है!

मौज प्रेमियों का देश

—सरल

खाओ, पियो और मौज करो—यह कहावत आपने भी सुनी होगी! यह कहावत सुनने में बहुत अच्छी लगती है. मगर सही मायनों में दुनिया में आमतौर पर कोई भी आदमी केवल खाने, पीने और मौज के जरिए जिंदगी के दिन नहीं गुजार सकता. क्योंकि जिंदा रहने के लिए हर किसी को कोई न कोई मोटा-महीन काम करना ही पड़ता है.

आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि एक देश ऐसा भी है, जहां के निवासी सिर्फ मौज करते हैं. इस देश का नाम 'ला' है.

अमरीका के पास, खुले समुद्र में यह एक छोटा-सा द्वीप है. यहां की जनसंख्या केवल पच्चीस हजार है. इस देश पर न किसी दूसरे देश का राज्य है, न यहां का अपना कोई राजा है.

न यहां कोई पुलिस है, न सेना है! दस साल पहले यहां एक सिपाही होता था. अब उसे भी पेंशन दे दी गई. न यहां कोई अदालत है, न कचहरी है. हो भी कैसे! आज तक यहां किसी ने अपराध किया ही नहीं है! कम से कम ऐसी वारदात (घटना) तो यहां कभी नहीं हुई, जिसे 'गैर-कानूनी' कहा जाए.

लोग यहां सही मायनों में खाते हैं, पीते हैं और मौज करते हैं. इसके सिवाय न वे कुछ करते हैं, न करना जानते हैं! मजे की बात तो यह है कि इस अद्वाखे द्वीप को उन लोगों ने आबाद किया था, जो दो सौ वर्ष पहले समुद्री जहाजों पर डाका डालते थे.

यहां के निवासियों की औसत आमदानी लगभग पांच हजार रुपये महीना है. आश्चर्य की बात यह है कि इस आमदानी के लिए किसी को कोई काम नहीं करना पड़ता.

इस द्वीप का प्रबंध पांच 'बड़े' आदमी करते हैं, जिनमें एक राष्ट्रपति होता है. दूसरा प्रधानमंत्री और तीन उसके सहायक मंत्री होते हैं. राष्ट्रपति का चुनाव 'ला' के लोग हर वर्ष करते हैं. यहां का कोई भी नागरिक एक वर्ष के लिए राष्ट्रपति बन सकता है—केवल एक वर्ष के लिए! उसके बाद फिर उसे कभी नहीं चुना जा सकता। खास बात तो यह है कि कोई भी आदमी यहां आसानी से राष्ट्रपति बनना पसंद नहीं करता. जब किसी से

लोग बहुत ज्यादा आग्रह करते हैं, तो वह 'मजबूरन' इस पद को स्वीकार कर लेता है. इसका कारण यह है कि यांहोंके राष्ट्रपति को न कोई 'वेतन' मिलता है, न कोई विशेष सुविधा या भत्ता मिलता है. उसके लिए अलग से किसी निवास स्थान का प्रबंध भी नहीं किया जाता. उसके 'सहायकों' को, भी खर्चों के लिए कोई रकम नहीं मिलती. वह आदमी जहां रहता है, वही मकान एक वर्ष के लिए 'राष्ट्रपति भवन' बन जाता है! साल भर 'राष्ट्रपति' की हैसियत से वह दिन-रात अपनी जिम्मेदारियों को पूरा करने में व्यस्त रहता है, इसलिए बाकी उम्र वह उस 'थकान' को दूर करने में ही अपना 'कल्याण' समझता है.

जहां तक प्रधान मंत्री और मंत्रियों की नियुक्ति का सबाल है, वह भी काफी अजीब मामला है. ये मंत्री दूसरे देशों से 'आयात' किए जाते हैं, जो केवल पांच साल के लिए 'नियुक्त' होते हैं. पांच साल बाद उन्हें ढेरों उपहार देकर उनके देश वापस भेज दिया जाता है. आश्चर्य की बात तो यह कि फिर उन्हें कभी इस द्वीप में आने की अनुमति नहीं दी जाती।

यहां सोने, चांदी और हीरे की इतनी खाने हैं कि हर आदमी को बिना हाथ-पांव हिलाए पांच छ: हजार रुपये हर महीने मिल जाते हैं. इन खानों में काम करने वाले कर्मचारी बाहर से बुलाए जाते हैं. आदमी चाहे आठ साल का हो या अस्सी साल का, हर किसी को बराबर रकम महीने के महीने पहुंचा दी जाती है.

'ला' द्वीप में कोई अस्पताल नहीं है. केवल एक वैद्य है, जो वहीं का निवासी है. पूरे देश का वही इलाज करता है. दस वर्ष पहले एक डाक्टर यहां बाहर से आया था, लेकिन उसी दिन उसे खदेड़ कर बाहर कर दिया गया था.

यहां के कानून के अनुसार अगर कोई अपनी 'जरूरत' पूरी करने के लिए चोरी करे, तो उस 'चोरी' को 'अपराध' नहीं माना जाता। उसके बजाय समाज को दोषी ठहराया जाता है कि उसने ऐसी परिस्थिति पैदा ही क्यों की कि एक आदमी को अपनी 'जरूरत' पूरी करने के लिए 'चोरी' का सहारा लेना पड़ा? इसी बात को ध्यान में रखते हुए देश की पूरी आमदानी को हर छोटे-बड़े में बराबर-बराबर बांट दिया जाता है.

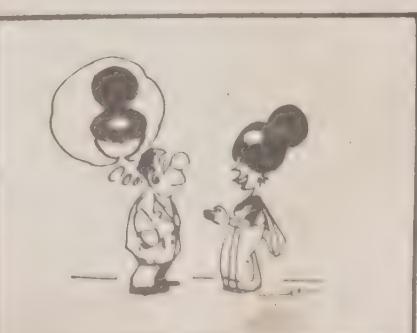
यहां पढ़ना लिखना बिल्कुल 'जरूरी'

नहीं समझा जाता!, यहां के निवासी कहते हैं—“हमें पढ़ने लिखने की जरूरत ही क्या है? हम क्यों अपनी शक्ति को 'किताबों' में नष्ट करें?”

पाठशालाओं की जगह यहां व्यामशालायें हैं. हर आदमी को अपनी सेहत और तंदुरुस्ती का पूरा-पूरा एहसास (ज्ञान) है. जगह-जगह आपको अखाड़े में कुश्ती करते लोग नजर आयेंगे.

औरतों को भी अपनी सेहत बनाने का पूरा-पूरा 'शौक' है! वे रसोई घर में सिर खपाने की बजाय 'महिला व्यायामशालाओं' में कुश्ती लड़ना ज्यादा पसंद करती हैं. हर रोज पका-पकाया खाना बाहर से आता है. औरतों का काम सिर्फ खाना है, पकाना नहीं!

यह है “‘मौज प्रेमियों का देश!’” एक ऐसा अजीब देश, जहां के निवासी सिर्फ मौज करते हैं. काम करने से लिए लोग दूसरे देशों से बुलाए जाते हैं.



खेल ट्रॉफी

रणजी चैम्पियन दिल्ली

के खिलाड़ियों के इस सीजन के रणजी मैचों के अंकड़े

इस वर्ष मार्च में रणजी ट्रॉफी फ़ाइनल में प्रथम पारी की बढ़त के आधार पर कर्नाटक के ७०५ रनों के विशाल स्कोर के मुकाबले ७०७ रन आठ विकेटों पर दिल्ली ने बना कर एक ऐतिहासिक विजय प्राप्त की। इस अविश्वसनीय विजय को संभव बनाने वाली टीम के खिलाड़ियों के पूरे सीजन के अंकड़े प्रस्तुत हैं।

बल्लेबाजी

खिलाड़ी	मैच	पारियां	नाट-	रन	उच्चतम	औसत	शतक
			आउट				
मदनलाल	६	६	३	२९२	११६	११.३३	२
राकेश शुक्ला	७	८	४	२८१	१०३	७०.२५	१
राजेश पीटर	३	३	२	६७	६७	६७.००	—
रमन लाम्बा	७	१०	१	४९२	२०५	५४.६६	१
मोहिन्द्र अमरनाथ	७	८	०	३७२	१८५	४६.५०	१
कीर्ति आजाद	६	८	०	३५९	१३२	४४.१४	१
सुरेन्द्र अमरनाथ	७	११	१	२८९	१३१	३६.१२	१
गुरशरण सिंह	५	६	१	१६८	१०१	३३.६०	१
सुरेन्द्र खना	७	८	०	२५६	११९	३२.००	१
चेतन चौहान	६	१०	०	२४०	८३	२४.००	०
मनिंदर सिंह	४	१	१	२	२	२.००	—

गेंदबाजी

	गेंदे	मेडन	रन	विकेटें	औसत	५ विकेटेपारी	१० विकेटे मैच में
मनिंदर सिंह	११७३	९३	५८३	४०	१४.५०	४	१
मोहिन्द्र अमरनाथ	७१७	४४	३४०	१६	२१.२५	२	—
मदन लाल	८१५	३९	३६७	१५	२४.४६	—	—
चेतन चौहान	११४	२	५९	२	२९.५०	—	—
कीर्ति आजाद	६४८	२३	२७१	९	३०.११	—	—
राकेश शुक्ला	३९२	६४	५२४	१४	३७.४२	—	—
राजेश पीटर	३३०	१८	११७	३	३९.००	—	—



बोलते अक्षर

प्यारू
शाला

ख्यातेश

ज्ञान्य

पाणि
त लाक

रुद्रांगौ

द्वारा
लचैक

शैषणी

परोपकारी



सिंजल

— जतन

श्रावक बम बिस्फोट हुआ।
धमाके के साथ प्रावाज चारों तरफ फैल गयी। कुछ तो प्रावाज सुनकर सहस्र गये, कुछ गिरे पड़े तो कुछ दौड़ने लगे। ढरिये नहीं, कुछ नहीं हुआ बस हाई स्कूल का रिजल्ट प्राइट हो गया। यह लबर ऐसी फूट निकली जैसे श्रीकान्त टेस्ट टीम में भर्ती हो गया।

मैं प्रीर मेरा भाई नरेन्द्र दोनों ने परीका दी थी। मैं तो पढ़ने में तीस मारखा था परन्तु वह बड़ा ही होशियार था। उसे पका भरोसा था कि उसे फेल करने वाला कोई नहीं है। मुस्कराकर मेरे से बोला अरे जा देखिया ना रिजल्ट। मैंने अनिष्ट की आशंका को ध्यान में रखते हुए कहा “जो प्राप्त हो भाई साहब।” बस अपनी पतलून चढ़ाई प्रीर इस तरह जैसे की पहली बार बैटिंग करने एक लाख प्रादमियों के समझ ईडन गार्डन में प्रवेश कर रहे हैं। रास्ते में मिले गाँव के लोग जो इतना पूछना चाहते हैं कि पास हुए अथवा फेल। देखते ही बोले सुना है बिटुमा तुम्हारा रिजल्ट निकल गया थोड़ी देर बाद की अपनी हालत का ध्यान रखते हुए मैंने नजर नीची करके सिर ऐसे हिला दिया जैसे की बुढ़ापे में कुछ लोगों की गद्दन अपने प्राप्त हिलने लगती है प्रीर फिर अपने कदम प्राप्त की तरफ बढ़ने लगे।

बार-बार एक ही समस्या रह-रह कर दिमाग में आ रही थी कि रिजल्ट को कैसे देखा जाएगा। यह सब ऐसे लग रहा था जैसे जाते ही पहली बाल बायम की खेलनी हो। वैर धीरे-धीरे करके कदम बढ़ते गए प्रीर अन्त में क्रीज पर पहुंच गए। लालाजी जरा अखबार दिलना। उधर लालाजी अखबार लाल किये बैठे थे। तिलमिला कर चिढ़ाने की मुद्रा में बोले ‘अखबार दिलाना……।’ अरे मैंने कहा डूब मरो कही नाकर। पूरा का पूरा

स्कूल फेल हो गया। बेड़ा गर्क हो इनका, मेरे तो अखबार के पैसे भी मिट्टी में मिल गए। मेरा अन्तर्मन यह सुनकर हँस उठा। जैसे की क्रीज पर पहुंचते ही साथी बल्लेबाज के प्रकाश की अपील को अम्पायर ने स्वीकार कर लिया हो। यह सुनकर गाँव की तरफ दौड़ पड़ा। बहुत खुश था। रास्ते में लोगों ने पूछा क्या हुआ रे? हुआ क्या, बड़ा हुआ अबके तो वे भी फेल हो गए जो कहते थे “है कोई भाई का लाल जो फेल करके दिखाये, आखिर मेहनत जो करते हैं।” प्रीर ही देखिए ना मेरे भाई नरेन्द्र को पूरी साल घिस-घिसकर मर गया। एक में हूँ पूरे साल मस्ती की छानी। अन्त में रिजल्ट दोनों का बराबर, वह भी फेल प्रीर में भी फेल। कदम ऐसे बढ़े रहे थे जैसे की कोई 200 रन की पारी खेलकर लौटे हों। मेरे फेल होने का थोड़ा सा गम भाई साहब के फेल होने की खुशी के नीचे टबकर रह गया। इस बात की चिन्ता कि बर वाला कोई कुछ कहेगा बस खत्म ही हो गयी थी। क्योंकि वे अब प्राराम से सोच सकेंगे कि जब नरेन्द्र ही फेल हो गया तो भेरी तो प्रीकात ही क्या है।

घर में चुसते ही मुलाकात भाई साहब से हुई। पूछा क्या हुआ तेरा? मेरा……बल्कि यह पूछिये कि प्राप्तका क्या हुआ। ज्यादा खुश मत होइये। प्राप भी फेल हैं फेल। मेरी बात का ऐसे विश्वास नहीं हुआ जैसे पैड एन्ड बैट के कैच पर कभी-कभी अम्पायर की ऊँचली का नहीं होता। परन्तु मेरी बात तो अम्पायर की ऊँचली की तरह ही थी उठ गयी तो उठ गयी। हँसी तो उनकी ऐसे गायब हो गयी जैसे छुइमुई के पौधे को ऊँचली दिखा दी हो। बोले, नहीं ऐसा नहीं हो सकता। मैं खुद जाकर ही देखूँगा।

यह बहकर घर से निकल पड़े। निकले तो इस तरह से ये जैसे मुहम्मद अली चीथी बार विश्व चैम्पियन बनने के लिए रिंग में कूद पड़ा हो। परन्तु लालाजी के उन्होंने वाक्यों ने उनको ऐसा धराशायी कर दिया जैसे की नीरी होम्स के घूसों ने अली को। बुझे से चेहरे को लेकर घर लौट रहे थे, रास्ते में भी गाँव के लोगों के मधुर वाक्यों से उनका स्वागत हुआ। कुछ कह रहे थे। अब पता चला है भेड़िये की खाल में भेड़ के अलावा कोई नहीं था तो कुछ बोल रहे थे यहाँ तो तेल की लाइन में लग-लगकर मर गए, उन्होंने तो बोल दिया, फेल हो गये।

मैं तो बस चावी भरे गुड़े की तरह उछल रहा था। अगर कीई देखता तो कहता, ‘लगता है लड़का फस्ट डिवीजन में पास हुआ है’ आखिर कोई कुछ कहने वाला तो था ही नहीं उधर हमारी माँ ने तो बस भगवान के चरणों में ही बसेरा डाल दिया। बोली अगर मेरे बच्चे पास हो गये तो चवन्नी का प्रसाद प्रीर अधिक बड़ा दूँगी, अपने पास रखी सभी चदरों को तेरे चरणों में अपित कर दूँगी। भाई साहब कह रहे थे ऐसा नहीं हो सकता है कुछ ना कुछ बात ज़हर है। मैं भी तो अपनी फार्म में था बोला, जो हो गया वह अब प्रीर क्या होगा।

ऐसे ही दो तीन दिन बीत गये प्रचानक प्रधानाचार्य जी गाँव में आये प्रीर बोले ‘लड़कों के द्वारा दी गयी फीस किन्हीं कारणों दश रुक जाने के कारण पूरे स्कूल का रिजल्ट रोक दिया गया था, मैं अभी-अभी रिजल्ट लेकर लौटा हूँ उसमें नरेन्द्र तो प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण है प्रीर महेन्द्र (में) फेल।’ बस फिर क्या था दशा ही बदल गयी। माँ अपनी चदरों की तरफ प्रीर भाई साहब मेरी तरफ, मैं नीचे की तरफ प्रीर मास्टरजी प्राप्तचर्य से हम सबकी तरफ देख रहे थे। भाई साहब तो इस तरह खुश हो रहे थे जैसे उन्हे कोई खोई कीज वापस मिल गई हो।

गरीबचन्द की बटात

भाई जी जानते हो मैंने हाथ में जो पकड़ रखा है वह क्या है। यह गरीबचन्द की चिट्ठी है। मैंने सोचा गरीब चन्द को चिट्ठी कौन लिख सकता है। जरा खोल कर पढ़ कर देखूँ तो।

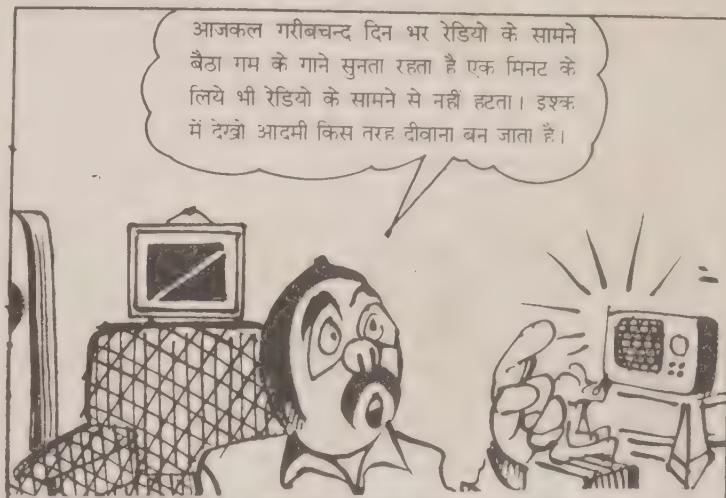
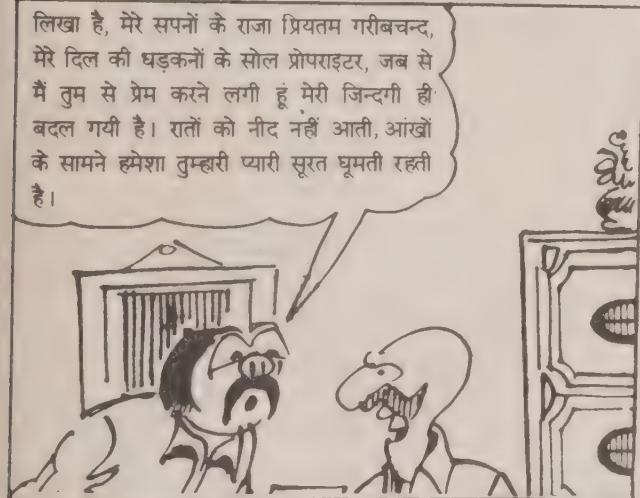


चुहिया ने अपना नाम मोना लिखा है। और अपना फोटो भी भेजा है बड़ी प्यारी गोल मटोल सी चुहिया है। ऐसी बातें लिखी हैं कि पढ़ते पढ़ते मुझे भी गुदगुदी होने लगी है।

ऐह! चुहिया का नाम मोना है। हमारा गरीबचन्द इश्क में गिरफ्तार हो गया है। मैं कई दिनों से देख ही रहा था कि गरीबचन्द गुमसुम बैठा रहता है। रात को छत पर जाकर चांद को ताकता रहता है। उसने हमारे कपड़े कुतरने छोड़ दिये थे। ठंडी ठंडी एक-एक पुट लम्जी सासे लेता रहता है।

लिखा है, मेरे सपनों के राजा प्रियतम गरीबचन्द, मेरे दिल की धड़कनों के सोल प्रोपराइटर, जब से मैं तुम से प्रेम करने लगी हूँ मेरी जिन्दगी ही बदल गयी है। रातों को नीद नहीं आती, आंखों के सामने हमेशा तुम्हारी प्यारी सूरत घूमती रहती है।

आजकल गरीबचन्द दिन भर रेडियो के सामने बैठा गम के गाने सुनता रहता है एक मिनट के लिये भी रेडियो के सामने से नहीं हटता। इश्क में देखता आदमी किस तरह दीवाना बन जाता है।



मैं चुपचाप जाकर लैटर उसके बिल में डाल देता हूँ उसे पता भी नहीं लेगा कि हमने उसका लैटर

स्क्रोल कर पढ़ लिया है। सफाई से गौंद के साथ लिफाफा पहले जैसा ही जोड़ दिया है।

हम उसको बतायेंगे भी नहीं कि हमने उसका लैटर खोल कर पढ़ लिया है और उसका राज हम जानते हैं। देखें वह क्या क्या गुल खिलाता है।

जब वह लैटर पढ़ रहा होयेगा तो उसकी शक्ति देखने लायक होगी।



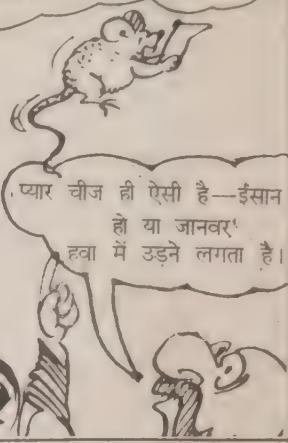
आह! मेरी मोना डार्लिंग का लैटर! चिट्ठी से कैसी खुशबू आ रही है। मीठी-मीठी, प्यारी-प्यारी!



मेरे दिल की धड़कनों के राजा



भाई जी देग्दो गरीबचन्द पत्र पढ़ते पढ़ते हवा में उड़ने लगा गया।



देग्दो प्रेम में कितनी नाकत होती है। बारह किलो के वटे से डमकी पूछ मैंने बाध दी तब जाकर हवा में उड़ना चाह दुआ। बटे से न बाधता तो यह उड़ना-उड़ना एप्पल मेंटलाइट के माथ मिल जाता।



याड़ी गरीबचन्द क्या बात है? आजकल तृ बदला-बदला सा लगता है, रोटी भी कम कुतर रहा है। डाइरिंग कर रहा है या तेरा हाजमा खराब हो गया है? हजमे की गोली बोली लाऊं?



प्यारे हमें पता है माझरा क्या है। हम खन का मजमून लिफाफा देख कर भांप लेते हैं जब 555 इश्क किसी से होता है दर्द सा दिल में होता है



भाई जी एक बात मेरे दिमाग में आई है कि यह इस तरह भृत्या रहेगा तो मर जायेगा। इसको भृत्य ही नहीं लग रही है। किसी तरह इसको खाना तो खिलाना पड़ेगा.



पकड़ कर जवरदस्ती गतुकोज का पाइप गले में नीचे उतार दिया जाये। भूख हड्डियां पर बैठे नेताओं को भी मरने में बचाने के लिये गंगा झी किया जाना है। शुसेंड हृ दयूव इश्क के मुह में?

क्या करता है बेवकूफ? यह भूखहड्डियां पर थोड़े बैठा है?



यह प्रेम का नाजुक मामला है। इसमें ऐसे बेदर्द तरीके आजमाने की सोचने की भी जरूरत नहीं है। हम सही तरीका सोचेगे, हम इसके यार हैं, हम इसकी मदद करेंगे।



अगर मोना चुहिया और इसमें प्रेम हो गया है तो एक ही रस्ता है, हम इन दोनों की शारी करवा देंगे। मोना को दुल्हन बना कर किंग साइज सिंगरेट की खाली डिब्बी के डोले में बिछा कर ले आयेंगे। दो प्रेमियों को मिला देंगे।



प्यारे गरीबचन्द, तू चिन्ना मत कर। हम तेरे भाड़ जिन्दा हैं। जिस चुहिया के प्यार में तू दीवाना बन गया है उसे हम भाभी बना कर हो नम लेंगे। दुनिया में हम दोनों के सिवा तेरा हीर है तीर कौन? तेरी सगाई और शारी की बातचीत हम ही करेंगे। जमाने से लड़ना भी पड़े तो हम जान पर खेल कर मोना को लाकर तेरे मामने घर्डा कर देंगे।

थम दोनों मेरे मच्चे दोमन हो।

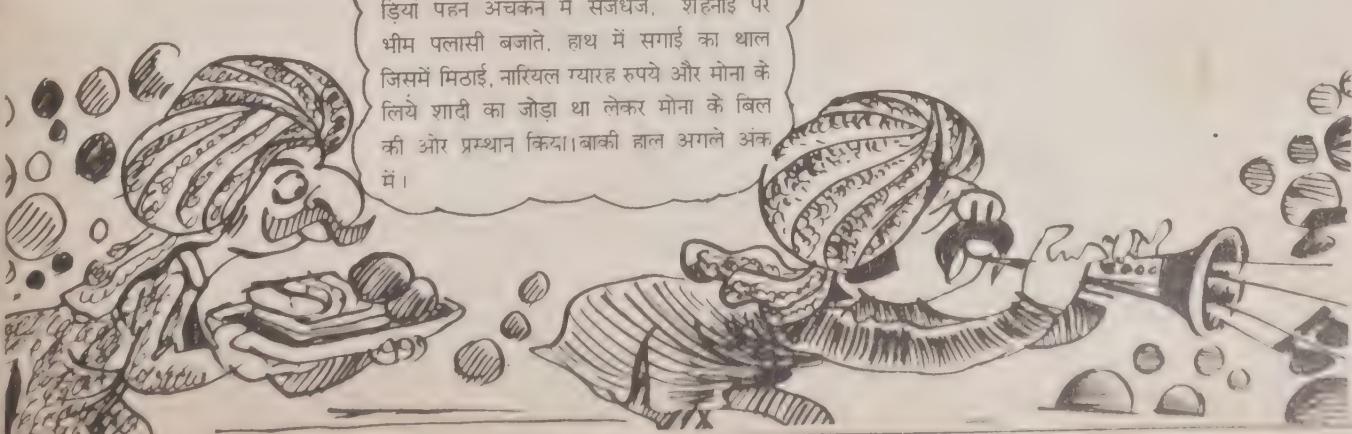
अपना एक ही यार है इसकी शारी में कोई कमर नहीं रहनी चाहिए। शारी व्याह में बड़ी २ बातें नय करनी पड़ती हैं। घरीदारी करनी है। खरीदारी की चीजों की लिस्ट होनी चाहिए।



यह शारी व्याह का मामला है, कोई मजाक नहीं है, बड़ी दौड़ धूप करनी है हमें! दैद वाज़ बालों को बुक करना है। टैट बालों से बात करनी है। अपने लिये भी कपड़े बनवाये हैं।



दूसरे द्वितीय दिन सिलबिल और पिलपिल ने पगाड़ियां पहन अचकन में सजेधजे, शहनाई पर भीम पलासी बजाते, हाथ में सगाई का थाल जिसमें मिठाई, नारियल ग्यारह रुपये और मोना के लिये शारी का जोड़ा था लेकर मोना के बिल की ओर प्रस्थान किया। बाकी हाल अगले अंक में।



पृष्ठ १४ से आगे

किसी समय यहां बापिस आ जायेंगे, श्याम तुम इला तथा महाराज कुमार की खोज करो क्यों कि यह दोनों ही शहर के एक ही हिस्से में रहते हैं। माहिन्द्र और मैं दूसरे लोगों से मिलने का प्रयास करेंगे।

"परन्तु मैं उनसे पूछूँगा क्या?" श्याम ने प्रश्न किया "महाराज कुमार से पूछना कि चंदू घंटे ने उन्हें घड़ी भेजी थी और क्या उन्होंने नीचे चिपके संदेश को देखा था और उसका क्या किया था? तथा उन्होंने घड़ी को फेंक क्यों दिया था?" तुम घड़ी अपने साथ ले जाओ तो ठीक रहेगा, हो सकता है उन्हें याद न हो, तुम किस घड़ी के विषय में पूछ रहे हो?" राजू ने श्याम को बताया।

"ठीक है, परन्तु मैं मिस इला मेहरा से क्या पूछूँ?" श्याम ने पूछा।

"उन से पूछना कि क्या चंदू घंटा उनके पास कोई संदेश छोड़ गये हैं? राजू बोला, "शायद तुम्हें उन्हें विश्वास दिलाने को कि तुम सही आदमी हो घड़ी दिखानी पड़े?"

"परन्तु हो सकता है तुम्हें भी गोवर्धन और मीरा को दिखाने के लिये घड़ी की आवश्यकता पड़ जाये?" "मैं असली घड़ी जैसी दिखने वाली एक घड़ी अपने साथ लेता जाऊंगा, चान्स तो है कि हमें घड़ी दिखानी ही नहीं पड़ेगी केवल उसका जिकर ही करना काफ़ी होगा फिर भी कबाड़ी घर में बहुत सी मि. घंटे की घड़ी जैसी दिखने वाली घड़ियां मौजूद हैं।"

"अच्छा बताओ सब बात ठीक से समझ आ गई यदि हाँ तो मेरे विचार से हमें चल देना चाहिये। श्याम तुम और हरी तुरन्त

चले जाओ, माहिन्द्र को और मुझे बरखसिंह के कार लाने की प्रतीक्षा करनी पड़ेगी", "एक मिनट रुको। अचानक महिन्द्र बोला" राजू तुम एक महत्वपूर्ण बात भूले जा रहे हो, हम अभी नहीं जा सकते।

राजू ने अंखें मिचकाते हुए कहा "क्यों नहीं?"

"क्योंकि अब खाने का समय हो गया है" माहिन्द्र ने भोला सा मुंह दिखाते हुए कहा।

रहस्य पर रहस्य

अब हम अपने निर्दिष्ट स्थान पर पहुंचा ही चाहते हैं" घरों के नम्बरों को देखते हुए श्याम बोला। हरी अपने पिता की पुरानी कार चला रहा था, "वो देखो मिं महाराज कुमार का नम्बर है!"

हरी ने कार खड़ी की और दोनों ढार कर चल पड़े। "शहर के इस भाग में रहने के लिये काफी धन की आवश्यकता होती है," हरी ने घर की पत्थर से बनी सड़क पर चलते हुए टिप्पणी की।

श्याम ने सहमती में सिर हिलाया उसके हाथ में जिप लगा घड़ी वाला बैग था। वह सोच रहा था कि क्या वाकई यह चिल्लाने वाली घड़ी इसी घर की है?

दरवाज़ा खुला और एक महिला ने भीतर से झाँका वह जवान न थी और कुछ परेशान और थकी प्रतीत होती थी।

"हां बोलिये क्या चाहिए?" वह बोली "यदि तुम स्काउटों के लिये चंदा इकट्ठा कर रहे हो तो मैं पहले ही दे चुकी हूँ।"

"नहीं जी, श्याम ने नम्रतापूर्वक उनर दिया "मैं पूछना चाहता हूँ कि क्या मैं मि. महाराज कुमार से मिल सकता हूँ?"

"नहीं तुम मिल नहीं सकते, वे बीमार हैं और कई माह से अस्पताल में हैं।"

"मुझे यह जानकर अत्यन्त खेद हुआ,

श्याम ने सोचते हुए उत्तर दिया। यदि महाराज कुमार अस्पताल में हैं तो वे घड़ी फेंक नहीं सकते थे। परन्तु श्याम जानता था राजू बात इतनी आसानी से समाप्त नहीं होने देगा। इसलिये हिम्मत कर उसने एक प्रश्न और पूछा,

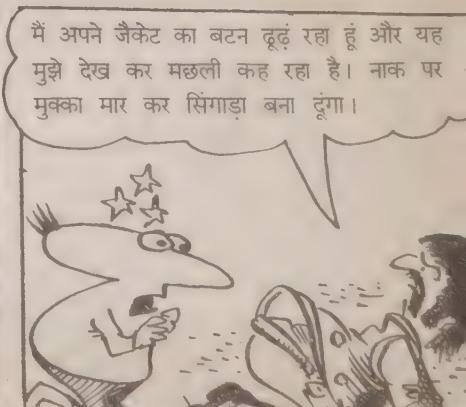
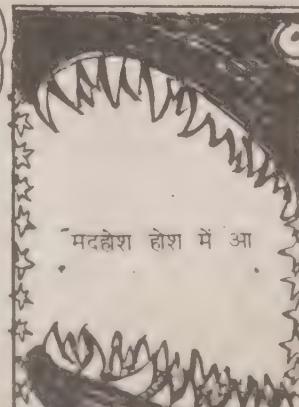
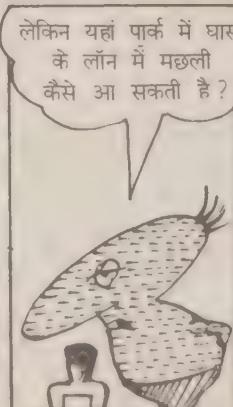
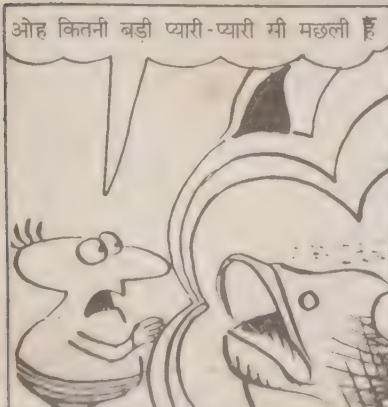
"क्या मि. महाराज कुमार का उपनाम राजा है श्रीमती जी? महिला श्याम की ओर देखती ही रह गई। श्याम बहुत ही विनम्र था तथा एक अत्यन्त सध्य लड़का था अन्यथा ऐसा प्रतीत होता था कि महिला उसके मुंह पर ही दरवाजा बन्द कर लेती। "हाँ!" है तो, परन्तु तुम ऐसा क्यों पूछ रहे हो?" वह बोली "क्या यह कोई मजाक है या खेल है?" श्याम ने शीघ्रता से उत्तर दिया कि ऐसा कुछ भी नहीं है। "हम एक घड़ी के विषय में खोज कर रहे हैं श्रीमती जी, मैं आपको दिखाता हूँ," उसने घड़ी जिप वाले बैग से निकाल कर उन्हें दिखाई, "मैं जाना चाहता हूँ क्या आपने इसे कभी देखा है?" "यह भयानक घड़ी!" वह बोली "जरा सोचो ऐसी भयानक घड़ी को मेरे पति के पास उनकी बीमारी की हालत में भेजना? यदि उन्होंने इसे कहीं सुन लिया होता तो उनकी तबियत और भी खराब हो जाती, वह डरावनी चीख!"

श्याम और हरी ने एक दूसरे की ओर देखा, आखिर वे ठीक स्थान पर ही पहुंचे हैं।

"तो मि. चंदू घंटे ने यह घड़ी मि.

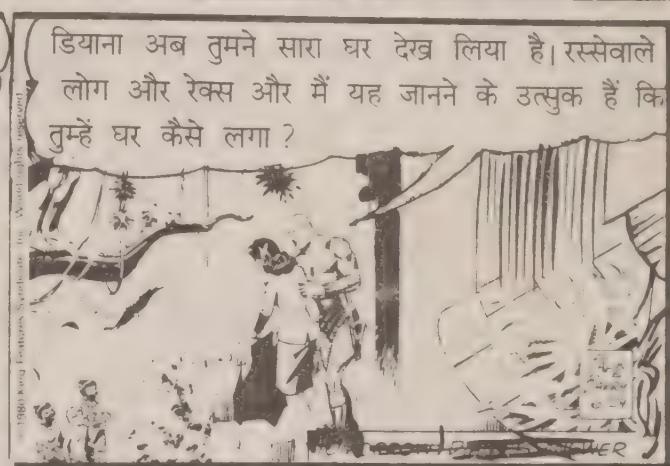
शेष पृष्ठ ३८ पर

मदहोश

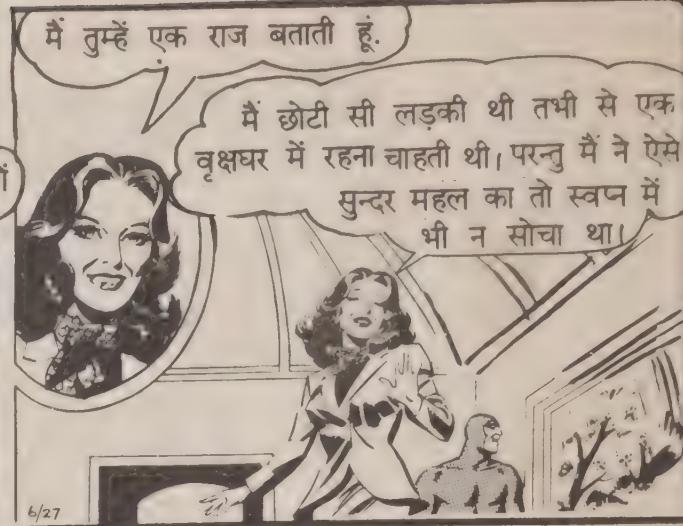




फैटम-जंगल शहर



मुझे अपना सोने का कमरा तथा बच्चों का कमरा एक बार फिर देखना है। मैं परदों और कालीनों के लगाने की प्रतीक्षा नहीं कर सकती।



चिन्ता न करो, तुम पूर्ण सुरक्षित हो; फराका हमारा ध्यान रखेगा।



जब तक रुको जब तक मैं मामा को बताऊं की हम वृक्ष पर रहते हैं।



गोगो और टोटू ने हमारे लिये भोजन तैयार कर लिया है। कुसी मेज तो नहीं है, परन्तु हम फर्श पर बैठ कर ही भोजन करेंगे।

जंगल के तरीके से,
आओ तुम सब भी
आकर शामिल
हो जाओ।

तुम्हें कुसी मेजों
की क्या आवश्यकता
है?

स्क्स तुमने इन चीजों का कभी इस्तेमाल नहीं किया, तुम
सीख जाओगे।

छुरी, काटे
चम्पच भी!

बहुत जलदी
नहीं, आशा है।

रस्सेवाले लोगों ने किट और हैलोईस के लिये ये झूले
बनाये हैं।

वे इन्हें बहुत प्यार करते हैं।

खीखी ---
खी---खी

रेक्स अपने गुप्त कमरे
में आराम से सोना।

डियाना हमें इन खालों से
ही काम चलाना पड़ेगा।

खूब काम चलेगा
मि. चलते फिरते भूत

अवश्य,
गुड नाईट।

वृक्ष घर में रात्रि।

यहां तो स्वर्ग का आनन्द है, पेड़ों
पर हिलते हुए तो मैंचिडिया जैसा
महसूस कर रही हूँ।

किसी ने डेविल
को जगा दिया है।

क्या है।

नहीं कुछ फिर की बात
नहीं है हाथियों का कोई झुंड
है।

वृक्ष घर की
रात्रि जब कि
सब निद्रापान
है।

परन्तु सारा जंगल
सो नहीं रहा है।

पृष्ठ ३४ से आगे

महाराजकुमार को भेजी थी ? ” श्याम ने फिर से पूछा.

“ वह बदतमीज चंदू घटा ! श्रीमती महाराज कुमार ने गुस्से से कहा ” “ मेरे पति को ऐसी वस्तु भेजने का साहस करना, केवल इसलिये कि एक समय दोनों एक साथ काम करते थे. वर्षों पहले जब मेरे पति रहस्यमय रेडियो प्रोग्राम लिखा करते थे, मैंने उस घड़ी का प्लग लगा कर अलार्म चला दिया, मुझे स्वप्न में भी ख्याल नहीं था और सोचो जब अचानक वह भयानक चीख निकली तो मेरा तो हार्ट फेल होते होते बचा, मैंने तो उसे तुरन्त ही कूड़े में रख कर कूड़ा उठाने वाले के लिये रख दिया, तुम्हें पृथक्की के किस कौन से यह मिल गई ? ”

“ कूड़ा ले जाने वाले ने इसे मेरे एक मित्र को बेचा था श्याम ने उत्तर दिया “ क्या आपने उसके नीचे लिखे संदेश को देखा था ? ”

“ तले पर लिखा संदेश, ” महिला ने त्योरी चढ़ाकर उत्तर दिया “ मैंने कोई संदेश नहीं देखा मैंने तो अगले दिन ही उसे फेंक दिया था. ” उस के साथ चंदू घटे का एक छोटा पत्र था वह भी मैंने फेंक दिया था. ”

“ क्या आपको ध्यान है उस पत्र में क्या लिखा था ? ” श्याम ने पूछा “ यह बहुत ही महत्व रखता है ! ”

“ क्या लिखा था ! ” ओह उसमें कुछ ऐसा लिखा था कि यदि मेरे पति उस घड़ी का अलार्म सुन उस पर ध्यान दें तो उनकी बिगड़ी किस्मत बन सकती है, कुछ बकवास, मेरे ख्याल से चंदू घटे का मेरे पति से ऐसा मजाक एक भद्दी बात है, जब कि मेरे पति बीमार हैं और उन्हें बिलों से अधिक अपने स्वास्थ्य की चिन्ता है, और जबकि ये दोनों एक समय अच्छे मित्र भी थे. मुझे यह समझ नहीं आया कि चंदू हमें अपनी एक डारवनी चीख से क्यों भयभीत करना चाहता है, ” वे रुकीं और नाराज सी हुईं.

“ परन्तु तुम यह सब क्यों जानना चाहते हो, तुम्हें इस घड़ी में क्या दिलचस्पी है ? ” उन्होंने पूछा.



“ हम उसके विषय में सब कुछ जानना चाहते हैं, ” श्याम ने उत्तर दिया, “ मिं० चंदू घटा कहीं गायब हो गये हैं और हमारा ख्याल है घड़ी इससे कुछ सम्बन्धित है. आपने यह तो नहीं

देखा होगा, घड़ी किस स्थान से भेजी गई थी ? ”

“ नहीं यह तो मैंने नहीं देखा, परन्तु बान कुछ अजीब सी है चंदू घटे का गायब हो जाना, आखिर क्यों ? माफ़ करना, मुझे टेलीफोन की घंटी सुनाई दे रही है और मुझे जो कुछ भी मालूम था वह मैं तुम्हें बता चुकी हूं नमस्कार ! ”

दरवाजा बन्द हो गया और श्याम हरी की ओर मुड़ा.

“ देखा तुमने खोज किस प्रकार आगे बढ़ती है हरी ! ” वह बोला “ हमें बहुत कुछ पता चल गया है, मैं यह तो नहीं बता सकता इस सब का क्या अर्थ है. परन्तु राजू के न होते हुए भी यह कह सकता हूं जानकारी महत्वपूर्ण है मैं यह भी कह सकता हूं कि मिं० चंदू घटे ने किसी विशेष कारण से घड़ी मि. महाराजा कुमार को भेजी थी, केवल अन्तर यह रह कि उन्हें वह मिल नहीं पाई, वे हस्पताल में बीमार पड़े थे और उनकी बानी ने घड़ी को कूड़े के साथ फेंक दिया. हो सकता है मि. महाराज कुमार को इसका अर्थ पता चल जाता परन्तु हमारा उन से मिल पाना संभव नहीं है इसलिये इसका अर्थ हमें स्वयं ही ढूँढ़ना पड़ेगा।

(क्रमशः)

दीवाना कठी पट्टैला जीतिये इनाम १० रु.

ऊपर से नीचे

२. ऊपरी यह करने पर बाहर से देखने में साफ व नया नया लगेगा (२-२)
३. स्याही रखने के पात्र से डंडी हटा कर दूसरे स्थान पर लगाने पर खाने-पीने को मिल सकता है। (३)
४. जिमनास्टिक्स में दिल कहां है ? (२)
५. दक्षिणी भारत शैली में अभिवादन (६)
६. इसे लगा कर सुनो। (२)
७. एक मुस्लिम वर्ग के लिये कढाई का काम करो। (४)
१०. उल्टे टोटका करता है और है ठिगनो। (२)
११. रुठी हुयी को खुश करने के लिये उपयुक्त हिलस्टेशन। (३)
१२. बिना से उल्टे टोटे। (२)

संकेत बायें से दायें

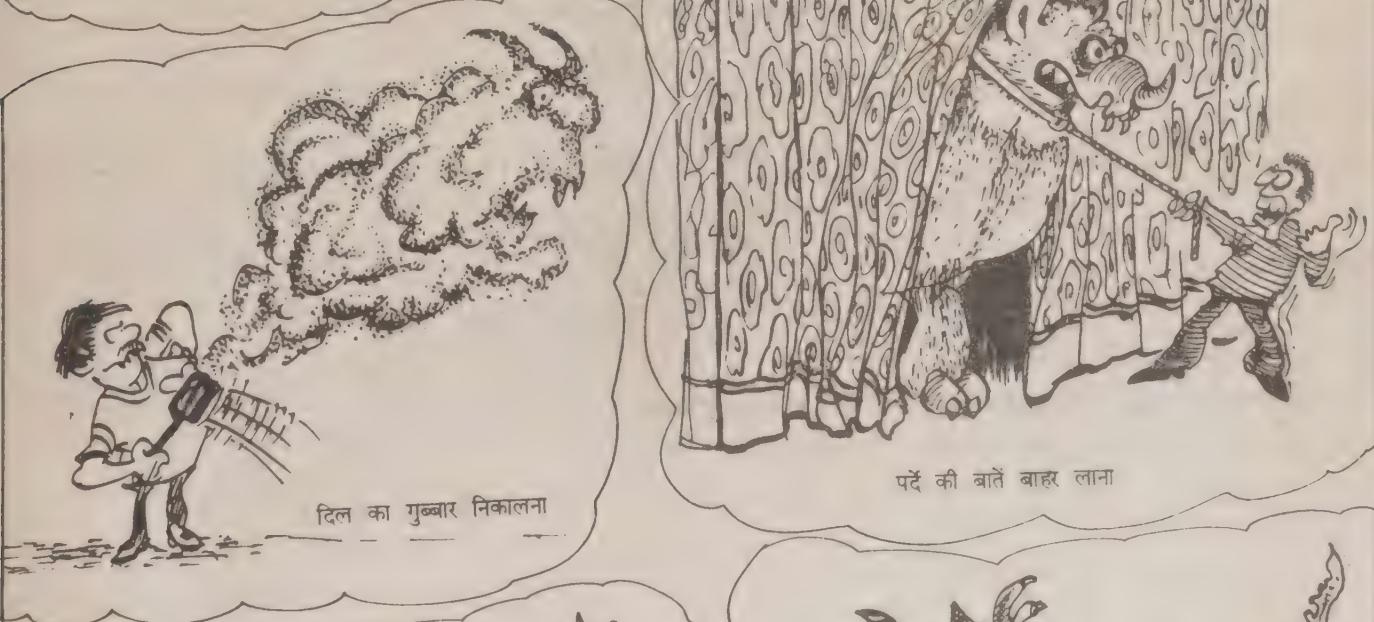
1	2	3	4	5	6
	7				
8					
9					
			10		11
12					
13					14

अन्तिम तिथि:-

१५-५-८२

१. कभी अलग न होने वाला साथ जैसे कपड़ों में यह . . . (२, ३, १)
७. चार छटांक है न चालीस सेर लेकिन दिल में पाप नहीं है। (३, २)
८. क श्रेणी के जहाज जो पक्षी है। (३)
९. आंसू बहाती। (२)
१०. मुंह के एक अंग से कल मिला हो तो सफलता नहीं मिलेगी। (३)
१२. इकट्ठा करना . . . समेटना। (४)
१३. आधी ट्रैफिक पेड़ के बिचले भाग से टकरा जाये ऐ कस्ट मिलेगा। (३)
१४. रगड़ कर लगाई। (२)

प्रवलीत बोली-कटाकरों के रैद्रूप



लाल्हु विश्वापन

Self Protection from theives & Beasts with strong metal Fold-ing 6 Round Automatic Pistol emitting Daziling fire with loud and thunderous sound

No Licence required

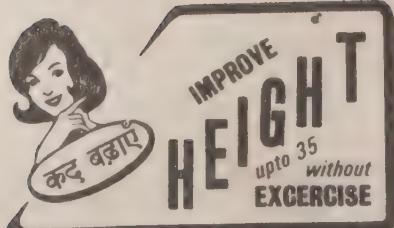
INDIA'S FIRST
RUSSIAN MODEL
TIGER ZORRO
777

6 Round
Automatic Pistol



Costs Rs. 75/- only. Original leather case & 300 Bullets free Postage Rs. 10/- Extra. Extra Bullets Rs. 5/- per hundred.

EXPORT AGENCY (SD)
Mahavirganj Aligarh



Consult personally or send self-addressed stamped envelope for details to :

DR. BAGGA
LAL KUAN, (Opp. Kucha Pandit)
DELHI-110006. PHONE : 262426

1000(Golden Stripped)Gummed
ADDRESS LABELS



With imported technology in India. Your name and address beautifully printed on 1000 finest quality Golden stripped gummed labels Packed in attractive Carton. Free : 800 year calender. Price Rs. 25 by VPP (Post extra) GIKAY ARTS EMPORIUM, 150-Gupta Colony, Delhi-9

दीवाना

के वार्षिक सदस्य बनिये
और १० रुपये बचाइये

चन्दे की दरें

वार्षिक	अर्द्धवार्षिक	एक प्रति
२७ रुपये	१४ रुपये	१ रुपये ५० पैसे

साधारण रुप से दीवाना की सदस्यता शुल्क ३६ रु. एवं डाक खर्च अलग से होती है। लेकिन आप अभी सदस्य बनिये और १० रुपये बचाइये एवं अपनी कापी अपने घर या दफ्तर में प्राप्त कीजिये।

मैंने दिये कृपन को भरिये और चन्दे की रकम के साथ हमें डाक द्वारा भेजिये। चन्दे की रकम केवल दीवाना के नाम से नहीं भेजें।

अपना सदस्यता शुल्क शीघ्र भेजिये

सरकुलेशन मैनेजर, दीवाना, C-BI, बहादुर शाह जफर मार्ग, नई दिल्ली-११०००२

कृपया मुझे दीवाना के वार्षिक/अर्द्ध वार्षिक ग्राहकों की सूची में सम्मिलित कर लीजिये। मैं चन्दे की रकम ————— रुपये भारतीय पोस्टल आर्डर/डिमांड ड्राफ्ट, मनीआर्डर नं. ————— से भेज रहा हूं।

नाम —————

पता —————

शहर/ज़िला —————

पिन कोड —————

आज्ञा पालन

उन्होंने बेटी को

बुलाया

और समझाया,

कम से कम

अच्छे कपड़े पहनों।

और उसी दिन से

वह यों रहती है,

कहे अनुसार

कम से कम

कपड़े पहनती है॥

गतिमान

वे

गतिमान हैं

क्योंकि

वायुयान में

विराजमान हैं। राजेन्द्र चंचल

पसन्द

एक आलीशान होटल में

उन्हें ले जाकर

पूछा मैंने सादर—

“क्या पसन्द करेंगे आप

मटन, कबाब

या अन्डों की करी ? ,

बोले मुस्कराकर वे—

“मुझे तो पसन्द है

केवल तस्करी.”

—सूर्य कुमार पांडेय

WEMBLEY



“GREY-TOUCH®
Hair
Colouring
Stick”

LOOK YEARS
YOUNGER

Ask for free
literature



A BOON FOR THOSE WHO CAN'T
WITHSTAND HAIR DYES

WEMBLEY LABORATORIES
SINGH SABHA RD., DELHI-7

संगीत की भाषा में विभिन्न लोगों के लिये

संगीतका नृदय



लड़कियों के लिये—एक नया फैशन



पनवाड़ी के लिये—सिगरेट लगाने की रस्सी बराबर



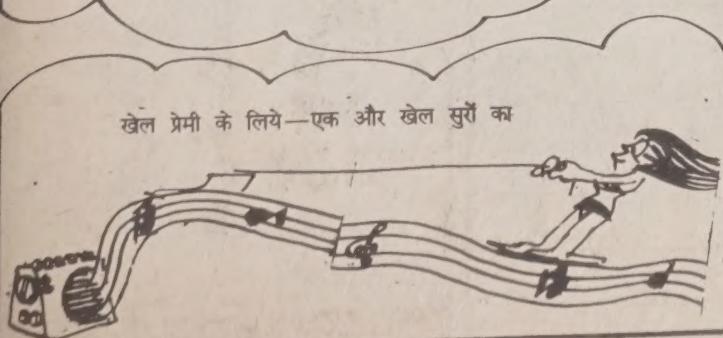
चमचे के लिये—चमचागीरी का साधन



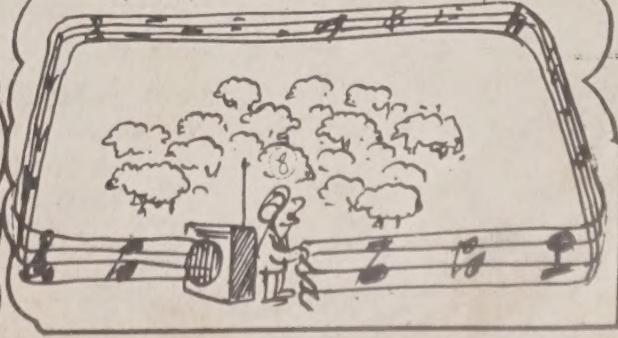
प्रेमी के लिये—प्रेमिका तक पहुंचने की सोची



नियशब्दी के लिये
मौत का सामान



खेल प्रेमी के लिये—एक और खेल सुरों का



भेड़े चराने वाले के लिये—भेड़ों का बांडा



सुनेद्र लम्हानी, छापर, रीवा, १६ इन्ह पाल सिंह २४८/C थोसी काली पद बशु (दहाती) स्टेशन मनोज अरोड़ा, एन. सी. मेनगुता जय कुमार जैन द्वारा बालचंद मवीन निर्मल, जी. एच. पी. इन्ड्रजीत कपूर, WZ
मुहल्ला, करनाल, २९ वर्ष, कालीनी बरकतका वका. नं. भवन, तीसरी मंडी, मानवाद, सुरेशबद्र जैन नवापारा रजिम कालीनी, B.N. ६१/३९० सुदर्शन पार्क, नई वर्ष, घूमना पड़ना। मुहल्ला, करनाल, २९ वर्ष, कालीनी बरकतका वका. नं. भवन, तीसरी मंडी, मानवाद, सुरेशबद्र जैन नवापारा रजिम कालीनी, B.N. ६१/३९० सुदर्शन पार्क, नई वर्ष, घूमना पड़ना। २४१/D १८ वर्ष मित्रता श्रीराज, २० वर्ष, पत्र-मित्रता। (म.प.) २२ वर्ष, एरिंटन कैला, गोखड रोड, बड़ादारा, २१ वर्ष, ११००१५, १५ वर्ष, पड़ना।



सुनेद्र कुमार आपात्य है. डी. ८३ नेश गुलाटी 'दीपक' २४, न्यू जसविन्दर सिंह धनी अमीर पेट राजेंद्र महाशब्दे, पांडी कमलानगर शिव कुमार अरोड़ा, सुनेद्र अरोड़ा, ए-३/२६ मोती कमल नागपाल १/१ मोती झील सदिवालय कालीनी, मार्किट तिलक नार नई दिल्ली-१५-हैदराबाद (आ. प्र.) १८ वर्ष, सब्जी मंडी, दिल्ली-७, १८ वर्ष, चम्पा लाल की हँसी, खुरजा, नगर, नई दिल्ली-१५, १८ वर्ष, गोहतास नार, शारीराया, २० वर्ष, पत्र-मित्रता। (म.प.) २२ वर्ष, एरिंटन कैला, गोखड रोड, बड़ादारा, २१ वर्ष, ११००१५, १५ वर्ष, पड़ना। दीवाना पड़ना, गिटर बजाना जासूसी करना। १८ वर्ष, टी वी देखना फरमाईश बेजाना, बिकेट खेलना। दिल्ली-३२, १६ वर्ष, ऐश्वर्या लखनक (उ.प.) ११००१८, १७ वर्ष



भगवान दास सेनी, ५३६, गली लाल चन्द्रानी कमल न्यूशालीमार प्रवेश कुमार भट्टानगर, ११२० फिरोज जावेद, कौन्सलेट आफ कृष्ण गोपाल अरोड़ा, मकान नं. मामराज अग्रवाल, फुसरो बाजार सच्चा नंद बलवानी, आर्य समाज, नजफगढ़, नई, जो. आ. सोसाइटी बैंकेट ए-१, कायस्थबाड़ा, सिकन्द्राबाद, ईरान बैंक-२०, १९ वर्ष, सच्चे. ११२/A, उत्तरी गांधी कालीनी, गिरिहींह (बिल्डर), २० वर्ष, पत्र-कार्य, चित्र सिनेमा के दिल्ली-४५; १८ वर्ष। इलाहाबाद, १७/१ वर्ष, क्रिकेट, बुजान्साहर, २१ वर्ष। देस्त की तलाश करना। मुरफफर नार, १७ वर्ष मित्रता। मुदक, ग्वालियर १८ वर्ष



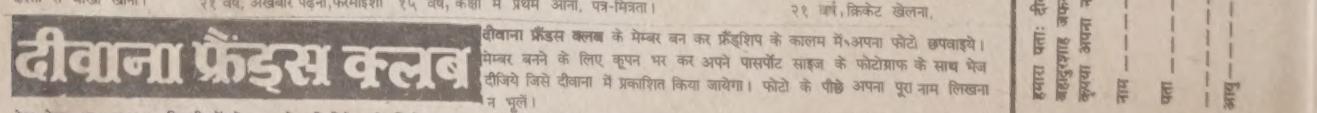
सनीपन राजेंद्र बर्मन, जी. कृष्ण गोपाल अग्निहोत्री, शैलेन्द्र सतीश कुमार नहला, मकान नं. विजयकुमार, सेन्ट्रल रेलवे क्वाटर सुनेद्र कुमार शर्मा, शर्मा न्यूज माधव प्रसाद, सिल्लेबाड़ा, जि. अजीत कुमार सिंह १०५८९/B, रामनार बैंग बेगम पक्का कोट, डाक-कार्यालय (जि. २ A/१९६/B, फीदाबाद, ११ वर्ष, नं. J/1/6/A, आगरा कैन्ट, एजेन्सी, बाजारपुर, कालीपुर, नैनी-नागपुर, महाराष्ट्र, ११ वर्ष, दीवाना। प्र. सिंह, एस. डी. ओ. रोज़ बाएंडकी (उ.प.), १६ वर्ष, नैनीताल, ३.प्र. २३ वर्ष घोटोगामी। १७ वर्ष, जाने गाना। ताल, १९ वर्ष, घूमना पड़ना। (बैशाली) १५ वर्ष



संजल गुप्ता द्वारा एम. एम. गुप्ता सुरेश कुमार अग्रवाल द्वारा बल्लू सुधीर कुमार, पुणा दाना मंडी, दर्वन जैन, जैन कालीनी, शिवपुरी दिपक कुमार हेलपटपुर मोदी नं २ मुकेश कुमार जैन, कुन्दन भट्टन सत्यनारायण बेवर द्वारा उत्तर चक्रधर, नार गाराड (म.प.) बेलकेपर सोसाइटी १२/२ जी. के. यहेशवरी स्ट्रीट, कोटपुरा, १४ वर्ष, रोड लुधियाना, २२ वर्ष, एकान्त कामडी, नागपुर, १६ वर्ष, जूडी छावनी, चौपहा कोटा (राजस्थान) पंचांग सोनगिरी कुमा बैंक-४९६००१, १६ वर्ष रोड, कलकत्ता-४६, २० वर्ष क्रिकेट सप्रह। मै बैठ कर सोचना। काटे। दीवाना पड़ना। जि.) १८ वर्ष, फरमाई



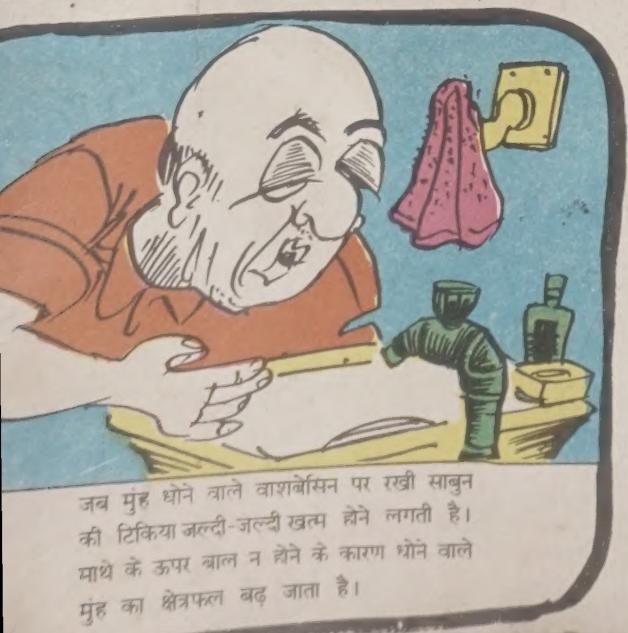
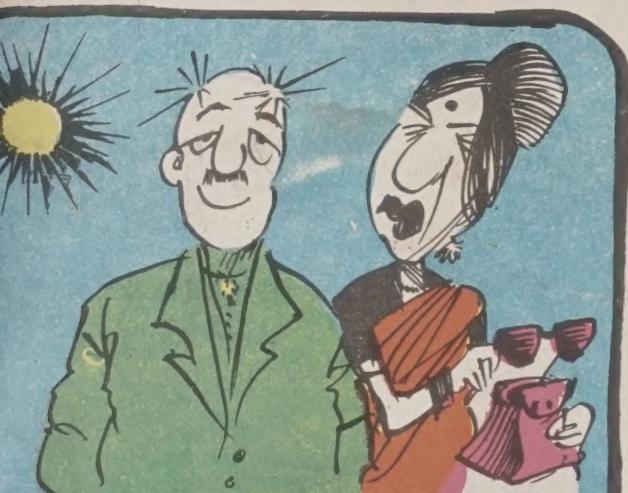
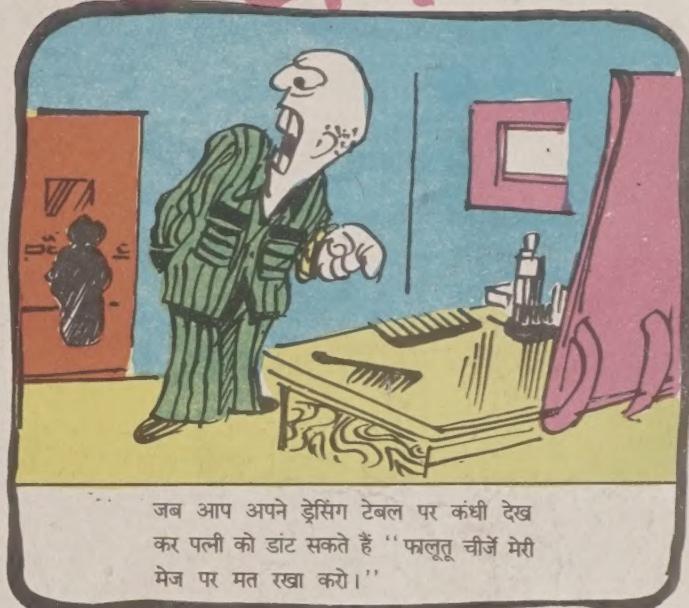
मनोज जयं ५०८८, येन बाजार अमरनीत कुमार १८१८ कजली रवीन्द्र कुमार द्वारा श्री मदन मोहन सीसी सेठी, मकान नं. ८८१/४६ हरीसिंह I-१६१५००, बापानगर, पराद गंग नई दिल्ली-५५, २० वर्ष, गेट, कालीपुर (आलीपुर) पंजाब, लाल राजो की गली केराना (सु.न) गलीनं, १५रातप नगर, २० वर्ष, मिलटीरोड, कोलकाता, नई दिल्ली, दोस्ती से धोखा लाना। २१ वर्ष, अखबार पढ़ना, फरमाईशी १५ वर्ष, कक्ष में प्रथम आना, पत्र-मित्रता। २१ वर्ष, क्रिकेट खेलना।



तेज प्रेस, नवा बाजार, दिल्ली में तेज प्राइवेट लिपिटेक के लिये पन्नालाल जैन द्वारा मुद्रित एं प्रकाशित प्रबन्ध सम्पादक विश्ववन्मु गुप्ता।

दीवाना प्रैंडस क्लब ८३०, नई दिल्ली-१००००२.
उत्तर यांग, नई दिल्ली-१००००२.
बैलून अन्न व फाफ-पाफ
कुल्हा अन्न व फाफ-पाफ
नम
पता
दीवाना प्रैंडस क्लब ८३०, नई दिल्ली-१००००२.
बैलून अन्न व फाफ-पाफ
कुल्हा अन्न व फाफ-पाफ
नम
पता
दीवाना प्रैंडस क्लब ८३०, नई दिल्ली-१००००२.
बैलून अन्न व फाफ-पाफ
कुल्हा अन्न व फाफ-पाफ
नम
पता
दीवाना प्रैंडस क्लब ८३०, नई दिल्ली-१००००२.
बैलून अन्न व फाफ-पाफ
कुल्हा अन्न व फाफ-पाफ
नम
पता
दीवाना प्रैंडस क्लब ८३०, नई दिल्ली-१००००२.
बैलून अन्न व फाफ-पाफ
कुल्हा अन्न व फाफ-पाफ
नम
पता

आपको पता लगता है कि आप ठंजे हैं जब...



32.00 रुपये

बच्चों के सूखा रोग की प्रसिद्ध दवा

लाल तेल



बच्चों के दाँत
सरलता से
निकलते हैं।

निर्माता:- लाल तेल फार्मसी उन्नाव, यू० पी०



दिल्ली में हमारे डीलर्ज :-

कान्ती लाल आर. पारिख, चांदनी चौक, दिल्ली-६
दी रीयल कैमिकल कम्पनी, ३२२,
खारी बाबली, दिल्ली-६

रत्ननलाल जगजीत सिंह, १८८७, खारी बाबली दिल्ली-६